कोचीन शिपयार्ड लिमिटेड

(भारत सरकार का उद्यम)

सागर रत्न

हिंदी गृह पत्रिका

2019-2020

कोचीन शिपयार्ड लिमिटेड केलिए ऑवररॉल चैम्पियनशिप ट्रॉफी

कोचीन शिपयार्ड लिमिटेड

(एक मिनिरत्न सूचीबद्ध कंपनी)
भारत सरकार का उद्यम

सागर रत्न

हिंदी गृह पत्रिका 2019-2020
12 वां अंक

अध्यक्ष की कलम से 01

पोत परिवहन मंत्रालय के नए सचिव 02

लेख 03

हिंदी मुहावरे 28

राजभाषा समाचार 29

बोलचाल की हिंदी 46

समय निर्धारण 47

कंपनी समाचार 48

बाल रचनाएँ 52

मसालों का नाम जानिए 54

वर्ग पहेली 55

संपादक मंडल

संरक्षक
श्री मधु एस नायर
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

संपादक
श्री रमेष के जे
मुख्य महाप्रबंधक
(मानव संसाधन एवं प्रशिक्षण)

संपादक सदस्य

श्री पी एन संपत्त कुमार
सहायक महाप्रबंधक (प्रशासन)

श्रीमती सरिता जी
सहायक प्रबंधक (हिंदी)

श्रीमती लिजा जी एस
हिंदी अनुवादक

श्रीमती आतिरा आर एस
हिंदी टंकक

पत्रिका में अभिव्यक्त विचारों से कोचीन शिपयार्ड का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

अध्यक्ष की कलम से...

यह हमारे लिए बहुत ही हर्ष की बात है कि कोचीन शिपयार्ड की हिंदी गृह पत्रिका "सागर रत्न" का 12 वाँ अंक का लोकार्पण किया जा रहा है। कोचीन शिपयार्ड हमेशा से ही राजभाषा के सक्रिय गतिविधियों के सफल कार्यान्वयन हेतु सकारात्मक रवैए को अपनाता है। यही नही हमारे हिंदी अनुभाग द्वारा गृह मंत्रालय के राजभाषा नीतियों के कार्यान्वयन की दिशा की ओर ठोस कदम उठाया जा रहा है जिसकी मैं सराहना करता हूँ।

मैं बड़े गर्व के साथ कहना चाहता हूँ कि गत वर्ष हिंदी कार्यान्वयन के क्षेत्र में हमारे लिए एक सुनहरा वर्ष रहा है । कोचीन शिपयार्ड लिमिटेड को गृह मंत्रालय, भारत सरकार से राजभाषा के उत्कृष्ट कार्यान्वयन हेतु राजभाषा कीर्ति पुरस्कार और पहली बार नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, कोच्ची से ओवरऑल चैंपियनशिप ट्रॉफी और राजभाषा के उत्कृष्ट कार्यान्वयन के लिए राजभाषा शील्ड से भी सम्मानित किया गया।

इस साल हमने कंपनी के बाहर कोच्ची शहर के स्कूल और कॉलेज के छात्रों के बीच राजभाषा के उपयोग को फैलाने हेतु अभिनव तरीके पेश किए हैं।

हम सब जानते है कि आज हम कोविड - 19 महामारी के संक्रमण में हैं और इस दौर पर हमें चाहिए कि अपना हौसला बनाए रखें और एक जुट होकर हम सरकार के दिशा निर्देशों का पालन करते हुए इस दुविधा से बाहर निकलने का प्रयास करें। राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार को नई दिशा और नया मोड प्रदान करने के लिए हम प्रौद्योगिकी की सहायता से विभिन्न कार्यक्रमों का संचालन कर रहें हैं। इस दिशा में हमने कंप्यूटरों का उपयोग करके अपनी बैठकों को ऑनलाइन मोड में आयोजित करने की शुरुआत की है। यह हमारे हिंदी अनुभाग द्वारा उठाया गया एक अनूठा कदम है। आइए हम सब मिलकर हिंदी भाषा को और प्रचलित करने में योगदान दें।

मैं इस अवसर पर हमारे पोत परिवहन मंत्रालय के नए सचिव श्री संजीव रंजन का हार्दिक रूप से स्वागत करता हूँ। आशा करता हूँ कि उनके मार्गदर्शन से भी हम प्रगति के क्षेत्र की ओर आगे बढ़ सकेंगे।

"सागर रत्न" के सफल प्रकाशनार्थ पूरे दल को हार्दिक शुभकामनाएं देते हुए ....

जय हिंद ।

मधु एस नायर
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

पोत परिवहन मंत्रालय के नए सचिव

श्री संजीव रंजन

श्री संजीव रंजन आईएएस का हार्दिक स्वागत है, जिन्होंने पोत परिवहन मंत्रालय के नए सचिव के रूप में कार्यभार ग्रहण किया । वे 1985 बैच के त्रिपुरा कैडर के भारतीय प्रशासनिक सेवा (आईएएस) अधिकारी है ।

लेख

वो लंबी...... कतार

सुमी एस
उप प्रबंधक

यह वह तस्वीर है जो मेट्रो मनोरमा में 4 दिसंबर 2013 को एक *कैप्शन* के साथ प्रकाशित हुई थी कि "1800 आएं नौकरियों की तलाश में"। ऊपर दाएं कोने में आप गुलाबी सलवार में एक लड़की को देख सकते हैं जो बेहद चिंतित है जैसे कि वही एक व्यक्ति है जिसे इस पूरी दुनिया के सभी समस्याओं का हल ढूंढने का जिम्मा है और वो लड़की मैं हूँ।

जैसा कि आप चित्र के शीर्षक से अनुमान लगा सकते हैं, यह वह क्षण नहीं हैं जहां मुझे किसी विशिष्ट उपलब्धियों के लिए सम्मानित किया जा रहा हो या प्रशंसा की जा रही हो। लेकिन फिर भी मैंने इस तस्वीर को सुरक्षित रूप से संभाल कर रखा है। आप में से कोई सोच रहा होगा कि क्यों? ऐसा इसलिए है क्योंकि एक छोटी सी निजी कंपनी में एक साल काम करने और फिर पांच साल तक शिपयार्ड में रहने के बाद भी, यह तस्वीर मुझे अपने करियर में आगे बढ़ने के लिए प्रेरित कर रही है, पता नहीं क्यों। अज्ञात फोटोग्राफर ने इस तस्वीर में मेरे जीवन के उस क्षण को कैद किया है जो बार-बार मुझे यह याद दिलाता है कि अब मैं कितनी खुशनसीब हूँ।

मेरे लिए आशीर्वाद यानी अच्छा परिवार, अच्छा स्वास्थ्य और अच्छी नौकरी का कुल योग है। लेकिन दुर्भाग्य से, हम चाहे कितने भी धन्य हो जाएं, हम इंसान आसानी से भूल जाते हैं कि हमारे पास क्या है और हम हमेशा उस पर अधिक ध्यान केंद्रित करते हैं जो हमारे पास नहीं है। यह एक असीम प्रक्रिया है जो अंत में एक ऐसी स्थिति की ओर ले जाती है जिसमें आप खुश रहना और वर्तमान में जीना भूल जाओगे।

मैंने अपने कई कार्यरत मित्रों को यह कहते हुए सुना है कि "मैं नौकरी छोड़ने जा रहा हूँ, यह काम बेकार है, अरे यार! मुझे अपने कार्यालय के बारे में याद न दिलाएं, यह राजनीति से भरा है, मैं काम से अतिभारित हूँ, फिर भी वेतन वृद्धि नहीं है, काम का दबाव इतना अधिक है कि मैं इसे और सह नहीं सकता, मुझे नहीं पता कि कब मैं अपने बॉस को मार डालूँगा, वह तो हिटलर नं 2 है, अरे! मेरे टीम मेट, वह तो केवल अपना काम दूसरों को सौंपने के लिए अच्छा है" आदि।

मुझे पूरा यकीन है कि हमारे कैरियर के किसी न किसी दौर पर ऊपर बताए गए कोई न कोई अड़चन से हम सबको तो गुज़रना पड़ा होगा। मैंने भी अपनी छोटी कैरियर के दौरान इसी तरह के विचारों और अनुभवों का सामना किया है (मुझे पता है, अभी अन्य विभागों में मेरे जो दोस्त हैं, अगर वे इसे पढ़ रहे हैं तो हमेशा की तरह आश्चर्यचकित होंगे, जैसे काम का अधिभार और वह भी एच आर विभाग में, ओह! हे भगवान!)। ऐसी मुश्किल घड़ियों में, वह तस्वीर मुझे यह याद दिलाती है कि एक समय था, जहाँ वह असीम कतार थी और उसके अंत में गुलाबी सलवार में एक लड़की एकदम हताश नज़र से, जीवन में किसी भी चीज़ की चाह या इच्छा के बिना, 'सिर्फ' एक नौकरी की उम्मीद लिए खड़ी थी । मुझे यह तस्वीर लगातार याद दिलाता है कि, जैसे मेरी सबसे अच्छी दोस्त कतार में मेरे आगे खड़ी है, वैसे ही बहुत सारे हमारे आसपास हैं जो अपने हाथ में स्नातक और स्नातकोत्तर की डिग्री हासिल करने के बावजूद अभी भी एक अच्छी नौकरी पाने की कोशिश में लगे हुए हैं।

एक प्रसिद्ध कहावत में कहा गया है कि 'जिस राह से आप आए हो उसे कभी न भूलें'। मेरे लिए, तो उस तस्वीर की वह लंबी कतार है जो मेरे राह को अब तक सार्थक और याद रखने योग्य बनाया है। और हां, मुझे यह कहते हुए गर्व और खुशी है कि आज जब मैं पीछे मुड़कर देखती हूँ, तो यकीन के साथ ये कह सकती हूँ कि ईश्वर ने मुझे "सिफ नौकरी" नहीं बल्कि "अच्छी नौकरी" देकर आशीष दिया है।

संगरोधन युग

इग्नेशियस बेबी
परियोजना सहायक

जनता कर्फ़्यू के पूर्व सप्ताह की ओर वापस चलते हैं। जब कोरोना सुदूर चीन में फैले एक प्रकार की सनकी बीमारी थी, केवल कुछ छात्रों ने इसका निदान किया और अंततः ठीक हो गए जो चीन से केरल वापस आए थे। जब सचमुच आपने सब कुछ छुआ, सभी से हाथ मिलाया और उस रोचक सैनिटाइज़र का उपयोग केवल अपने बैग में टंगे रहने के लिए किया, जो भारत, आप और आपकी जिंदगी केलिए हमेशा की तरह एक पेशा था ।

जनता कर्फ़्यू के पहले के कुछ दिनों में हमें नहीं पता था कि कोरोना हमारे साथ आखँ मिचौनी का खेल, खेल रहा था। इस संगरोध के दौरान जो विचार हमारे मन को पार कर गए, हमारे द्वारा लिए गए सबसे छोटे निर्णयों और कार्यो ने हमें वहाँ खड़ा करने में एक बड़ी भूमिका निभाई है कि *"हम कौन हैं* और *हम कहाँ हैं"*।

इस दौर के विभिन्न स्तर थे। कुछ तो स्वयं अपने लिए जुगाड़ करके भोजन के लिए तरस रहे थे। कुछ तो अपने प्रेमियों / साथियों के साथ रहने में भाग्यशाली रहें हैं - एक दूसरे के साथ अधिक समय बिताने और एक दूसरे को अच्छी तरह से जानने का मौका मिला। कुछ लोगों को अपने घर वापस आने और अपने बचपन के पड़ोसी और अपने माता-पिता के साथ लंबा समय बिताने को मिला। जबकि कुछ बदकिस्मत लोग तो हवाई अड्डों, रेलवे स्टेशनों और यहाँ तक कि सड़कों पर फंस गए।

निसंदेह रूप से, कोरोना ने कोई चारा नहीं छोड़ा, जिसके कारण हम पृथक हो जाएं। लेकिन यह हम पर निर्भर करता है कि हम जहाँ भी हैं या जो भी हैं उसका सबसे अच्छा फायदा उठाए। हो सकता है कि सालों बाद जब हम पीछे मुड़कर देखेंगे तो भगवान की योजना को और अधिक स्पष्ट रूप से देख पाएंगे तब हमें इस बात का पछतावा नहीं होना चाहिए कि हमने संगरोध भाग्य का फायदा नहीं उठाया है और यदि हो सके तो, जीवनकाल में सिर्फ एक बार मिलनेवाले इस संगरोध युग में उन लोगों और चीज़ों के साथ कुछ सार्थक और चिरस्थायी यादें बनाएं जिन्हें आपने चुना था।

नई बरसात

सुजीत एस
एसएसडीएम

नई बरसात ले आता है नई मिट्टी की उमंग
फूल पत्तों और हरियाली में छोड़ते जल की बूंदें
याद दिलाता पहले प्यार का मधुर मनोहर चेहरा
बन जाता वह सुंदर दूल्हा जब बरसा सूरज -प्रभा

छोटी -मोटी सूखे लान के होठों में भी मुस्कान
सूखे सूखे मिट्टी पर रचा गया सितारों की शान
बड़े पेड़ से बरसे मोती जब झुनझुनाता है पवन
साँझ का सूरज देता सबको लाली माणिक शोभा ।

इशारा करने लगा नभ भी इंद्रधनुष दिखाकर
ताकि हम उस पर भी दे थोड़ा ध्यान
जंगल के तरु शाखियों में बांसी बजाकर
तन मन को सुकून दिलाया ताज़ा पवन

सब कुछ भूले हुए मुझको याद दिलाकर
दिनांत का समंदर में डूबा दिनकर भी
चमेली दांत दिखाके लोरी गाकर सामने
आया अब तक छुपे हुए शीतल चांद ।

कुदरत का सुहावना रस पीते मुझे
न जाने कब नींद की नशा छा गई ।।

हलवाई की दुकान

संपत कुमार पी एन
सहायक महाप्रबंधक

रास्ते अनजाने में कभी-कभी खुद लक्ष्य बन जाते हैं। कुछ हालात तो ऐसे भी आते हैं, जब हमें यह तय करने में बड़ी दिक्कत हो जाती है कि "हम कहाँ जा रहे हैं या ... कहाँ से होते हुए जा रहे हैं ....।'

हाल ही में एक आकस्मिक सैर ....। केरल के कोल्लम जिले से तेन्मला होते हुए तमिलनाडु से गुज़रते हुए चेन्कोट्टा के रास्ते कुट्रालम से फिल्मीलोगों का पंसदीदा जगह तेन्काशी- सुन्दरपान्डीयपुरम के रास्ते से तिरुनेलवेली तक ....।

(आभारः दि हिंदु)

ताम्रपरणी नदी के किनारे स्थित एक प्राचीन शहर तिरुनेलवेली। पश्चिमी घाटी से निकलने वाली सुन्दर सरिता और उपजाऊ मिट्टी में फलता-फूलता तिरुनेलवेली शहर को एक खेती बाड़ी का केन्द्र बना डाला। दूर - दूर तक लह-लहाते धान और खिल-खिलाती कपास का खेत.... ऐसे मन को मोह लेने वाली ज़मीन को हथियाने के लिए ईस्ट-इंडिया कंपनी की नज़रे टिकी हुई थी, जिसके लिए वीर पांडी कट्टबोम्मन से युद्ध हुआ और फिर छल- कपट से उनका वध कर डाला।

सभी छोटे-मोटे शहरों की तरह यहाँ के सभी रास्तें भी बीचों-बीच स्थित एक मंदिर की ओर जा रुकती है। नेल्लयप्पन के नाम से विख्यात साक्षात परम-शिव का मंदिर जहाँ पार्वती देवी 'गान्धिमती' स्वरूप में विराजती है।

मंदिर के चारों ओर दुकानें। आस-पास के नज़ारों का मज़ा लेते हुए चलते वक्त देखा कि, वहाँ लोगों की एक लंबी कतार है..... जैसे मधुशाला के सामने का जन सैलाब। पास जाने पर पता चला कि भीड़ सीधी एक दुकान की ओर खींची चली जा रही है। दुकान का न तो कोई नाम हैं, न ही कोई लिखा हुआ पटल।

लोगों से पूछने पर पता चला कि वहाँ 'मशहूर हलवा' बेचा जा रहा है, हाँ...... वो भी 'तिरुनेलवेली हलवा'। तिरुनेलवेली के रहनेवाले चाहे दुनिया में कहीं पर भी हो, स्वाभिमान से अपनी 'मशहूर इरुट्ट कडा हलवा' का परिचय कराते हैं। बचपन में मेरे पिताजी के यात्रा- वर्णन में भी मैंने खूब सुना था इस "इरुट्ट कड़ा हलवा" के बारे में।

'बाप रे! इतनी भीड़ किस लिए?' हाँ.... क्योंकि ये हलवा रोज़ सीमित मात्रा में ही बनता है। यहाँ का दुकानदार तो विशेष प्रकार के गेहूं को अलग से मंगवाकर, उसे पीस के दूध निकालकर उसमें घी- शक्कर मिलाकर हलवा बनाता है। सुबह 10 से लेकर शाम 4 बजे तक हलवा बनाने का काम चालू रहता है। ठीक 5 बजे दुकानदार और हलवाई गरमागरम हलवा लेकर सामने आते हैं और बिकाऊ शुरू होती है।

एक व्यक्ति को ज़्यादा से ज़्यादा आधा किलो हलवा ही मिलता है। सभी ग्राहकों को ध्यान में रखते हुए हलवा बांधा ही ऐसा जाता है। छोटे - छोटे पत्तों पर 100 ग्राम मात्रा में भी उपलब्ध है, जिसका लोग वही खड़े - खड़े ही स्वाद लेते हैं।

हमारी बारी आते -आते हलवा खत्म होने लगा। हमें व्याकुल देखकर कतार पर सामने खड़ी पास ही के गांव की जैसी दिखने वाली महिला ने, पता नहीं क्यों, अपना हलवा लेने का इरादा छोड़ कर हमें मौका दिया और तब जाकर हमें स्वादिष्ट इरुट्ट कड़ा हलवा चखने का सौभाग्य मिला।

एक डेस्क के पीछे खड़े होकर हलवा बेचने वाले बुजुर्ग का बस एक झलक ही दिखाई पड़ा और साथ ही एक बल्ब की रोशनी पर दुकान का अंदरूनी भाग बडी मुश्किल से दिखा।

वापस होटल के कमरे में जाकर 'गूगिल' में देखा। कोई भी तामझाम वहाँ पर नहीं आया है। इस दुकान की न कोई शाखा है, न कोई सहकारी संस्था है न ही कोई लिखा हुआ पटल।

एक ही तरीके से कारोबार चलानेवाले। कई ज़माने से उनका और उनके कामगारों का पेट भरने की ज़रूरतों तक सीमित है उनका कारोबार। परंपरा पर टिके रहनेवाले... दाम और गुणवत्ता को प्रमुखता देते हुए बढ़नेवाले.......। सुस्थिर ग्राहक और पर्यटक हर दिन 'इरुट्ट कडा' ढूंढ़ते हुए वहां आते हैं।

(आभार: दि हिंदु)

चमचमाती रोशनी में दमकने वाली शानदार मिठाई की दुकान के बजाय सिर्फ़ 60 वॉल्ट बल्ब की रोशनी का एक छोटा सा कमरा.....। सिर्फ शाम 5 बजे से 6 बजे तक चलने वाला एक कारोबार। इसलिए तो इसका नाम तमिल में **'इरुट्ट कड़ा'** जिसका मतलब हुआ **'अंधेरी दुकान'** ।

कहा जाय तो वास्तव में यह एक तमिल ज़ायका नहीं है। क्योंकि बहुत पहले उत्तर भारत से आया हुआ एक बिजली सिंह है, इस दुकान का संस्थापक। अब उनका बेटा हरि सिंह इस दुकान का मालिक है। वैसे तो एक मशहूर नाम कमाने वाले स्थापना में जो बदलाव आना चाहिए वो सब इसको छू नहीं पाया है। ऐसा लगता है कि जैसे समय को 50 साल पीछे ले जाकर बांध दिया गया हो। समय के साथ आनेवाला

तीन साल पहले लिखा हुआ मेरा यात्रा- विवरण यहां समाप्त हो रहा था; लेकिन कल के अखबार में प्रकाशित खबर ने इस लेख को प्रकाशित करने में मुझे मजबूर कर दिया।

" इरुट्ट कडा " हलवा के मालिक हरि सिंह ने खुदकुशी कर ली। यह सुनने को आया है कि कोविड़ रोग का सदमा उनसे सहा नहीं गया।

मैं सोच रहा था कि, रोज़ी रोटी के लिए जीने वाले व्यक्ति ने किस तरह इस कोविड महामारी के दिनों को बिताया होगा? दुकान के स्थायी कामगारों को पगार देने में कठिनाई भी महसूस की होगी। परिवार भी भुखमरी में पड़ गया होगा............।

'इरुट्ट कडा हलवा' की मीठी यादों को पीछे छोड़ते हुए हरि सिंह चल बसे।

कल शायद उनके पुत्र, पौत्र या कोई अन्य व्यक्ति उनके नाम का फायदा उठाते हुए यहाँ एक नया कारोबार शुरू करेगा। कुछ भी हो, उस पुराने 'इरुट्ट कड़ा हलवा'का **स्वाद** अब यादगार बन के रह गया है..........।

सीएसएल सांस्कृतिक अद्यतन

मुकेश शंकर एम एस
वरिष्ठ प्रबंधक

सतत अध्ययन
आभार :
दि बुक "एंटीफ्रजैल : थिंग्स दाट गेइन फ्रम डिसऑर्डर"
नाज़िम निकोलास तलेब

सतत अध्ययन सीएसएल की चार सांस्कृतिक दक्षताओं में से एक है । सीएसएल के प्रत्येक कर्मचारी से यह उम्मीद की जाती है कि वह ड्यूटी पर रहते हुए इस व्यवहार को प्रदर्शित करें ।

हमारे आसपास दिखाई देनेवाली सभी चीजों को हम भंगुरता की दृष्टि से बांट सकते हैं । अनश्य एक ऐसी चीज है जिसे मूलभूत अपरिहार्य समाप्ति नहीं है । भंगुरता आम तौर पर एक वस्तु है, बल्कि अनश्य में एक सूचनात्मक प्रकृति मौजूद है । एक कार का जल्द ही नाश हो जाता है, लेकिन प्रौद्योगिकी के रूप में ऑटोमोबाइल लगभग एक सदी तक बना रहा है । मानव नश्वर है परंतु उनका जीन-एक कोड- अनश्वर हैं । कहने पर मूल पुस्तिका नश्वर है यानी पुराने नियम की एक विशिष्ट प्रति - लेकिन उसमें अंतर्निहित वस्तु अनश्वर है, क्योंकि इसे अन्य किसी मूल पुस्तिका में व्यक्त किया जा सकता है । भंगुरता केलिए, उसके जीवन का हर अतिरिक्त दिन एकलघु अतिरिक्त जीवन प्रत्याशा में तब्दील हो जाता है । अनश्य केलिए, हर अतिरिक्त दिन एकदीर्घकालीन जीवन प्रत्याशा का संकेत देता है ।

सीएसएल के प्रत्येक कर्मचारी केलिए सीएसएल में एक निश्चित आखिरी दिन है । जबकि एक संस्कृति के रूप में, सतत अध्ययन, हमें अतिजीवित रखेगा ।

कैद चिडिया

रनूब पी

दोपहर के खाने के बाद आंख लगते ही गेट खुलने की आवाज सुनाई पडी । जब गेट की तरफ नजर गई तो एक आदमी को घर की ओर आते हुए देखा । तब वह जोर से 'मीनू', 'मीनू' चिल्लाकर पुकारने लगी । खाने के बाद सभी सो गए थे, इसलिए किसी ने उसकी आवाज नहीं सुनी । फिर भी, वह बार-बार जोर से मीनू, मीनू चिल्लाकर पुकारने लगी । तब तक वह मेरे पास आ चुका था । उसने मेरे पिंजडे को अपने हाथों से हल्के से हिलाकर, सीटी बजाते हुए, पिंजडे के पास खडे खंभे में लगे बेल को बजाया । हर कोई आते ही खंभे में लगे बेल बजाते मेरी तरह रोनेवाला और कभी न नजर आनेवाली कोयल तब हमेशा की तरह तीन बार रोने लगी ।

इतनी ऊँची आवाज में रोने के बाद भी न आनेवाली मीनू-मीनाक्षी जब दरवाजा खोलकर बाहर आई तो, अभी तक न देखे हुए कोयल पर पिंकी को गुस्सा आया । बाहर आने के बाद, मीनाक्षी ने पिंजडे के पास खडे उस व्यक्ति से एक लिफाफा लिया और उससे कलम लेकर कागज पर कुछ लिखा । उसके बाद वह मेरी तरफ मुडकर हंसते हुए सीटी बजाते हुए चला गया। लिफाफा दहलीज के मेज पर डालकर मीनाक्षी, 'पिंकी', 'मेरी पिंकी' बुलाते हुए मेरे पास आ गई । लेकिन मैंने उसे अनदेखा कर दिया । कुछ नहीं बोला । तब उसने पूछा कि, 'गुस्सा हो क्या ?' । पिंकी यह पूछने केलिए तरस रही थी कि मेरे बार-बार बुलाने पर भी दरवाजा नहीं खोला, लेकिन कहीं से किसी कोयल की आवाज पर दरवाजा खोल दिया', लेकिन ऐसा नहीं हो सका । तब तक मीनाक्षी की मां ने उसे पुकारा, मां की आवाज सुनते ही वह लिफाफा लेकर अंदर चली गई ।

'इस घर में केवल मीनाक्षी को ही मुझसे प्यार है, बाकी सब बेकार है' पिंकी ने अपने आप से कहा । लेकिन उस प्यार में भी अब कुछ कमी आ गई है । मेरे, इस पिंजडे में कैद हुए चार वर्ष बीत गए है । उस समय मीनाक्षी छोटी बच्ची थी और स्कूल जाना शुरू ही किया था। जब से मैं यहां आई, तबसे मीनू को मुझसे बहुत प्यार था । हमेशा मेरे साथ रहती थी । रात को सोते समय, पिंजडे के साथ मुझे भी लेकर कमरे में जाती थी । लेकिन अब ऐसा कुछ भी नहीं हो रहा था । मीनाक्षी बडी हो गई, उसका प्यार और चाह कम हो गया । मां जी और पिताजी के बारे में तो कुछ कहने की जरूरत ही नहीं है । उन्हें यह भी पता नहीं है कि यहां ऐसा कोई रहता भी है ।

मां जी और पिताजी के बारे में बोलने पर उसे अपनी मां की याद आ गई। मीनाक्षी के घर में एक बडे नारियल के पेड में मां के साथ हम तीन बच्चे रहते थे। एक दिन नारियल तोडने केलिए पेड पर चढे आदमी ने चालाकी से मुझे पकडकर मीनाक्षी को दे दिया, पिंकी ने याद किया । मां और बाकी दोनों उड गए । सिर्फ मैं जाल में फंस गई, और अब तक पिंजडे में कैद हूँ ।

पहले तो मीनाक्षी का प्यार मुझे राहत देता था, लेकिन अब इसमें भी कमी आ गई है । पुरानी बातों को याद करके रोनेवाला ही था कि, फिर से वह कोयल बुलाने लगी । लेकिन इस बार मीनाक्षी की मां ने दरवाजा खोला । उसने मेरी तरफ देखा भी नहीं । उन दोनों की बातचीत से पता चला कि वह मीनाक्षी का मामा है । वह मीनाक्षी को कहीं ले जाने केलिए आया था । अगले दो महीने स्कूल बंद है । यह सोचते ही चक्कर आ रहा था । बेचारी पिंकी मीनाक्षी से यह कहना चाहती थी कि कभी न देखे कोयल को पिंजडे में उसके साथ छोडकर जाए । बेचारी पिंकी यह नहीं जानती थी कि कोयल की आवाज बिजली से चलनेवाले कॉलिंग बेल का था । यह न जानते हुए, कि आनेवाला समय अकेलेपन का है, बेचारी पिंकी, कोयल के इंतजार में बिता रही थी ।

मानकों की संवृद्धि - पोर्टेबल टूल्स पर नए मानदंड- डबल स्क्वायर- उत्कृष्ट प्रौद्योगिकी

हरिकिशन ई एस
सहायक महाप्रबंधक

' डबल इंसुलेशन ' की एक नई अवधारणा उभरी है जो विद्युत हैंड टूल्स पर 'डबल स्क्वायर' लेबल द्वारा इंगित की गई है। सुरक्षा को सर्वोपरि महत्त्व देते हुए नई अवधारणा सरल २ पिन इस आग्रह के साथ शुरू किया गया कि उपकरणों की सुरक्षा पर कोई समझौता न करें और

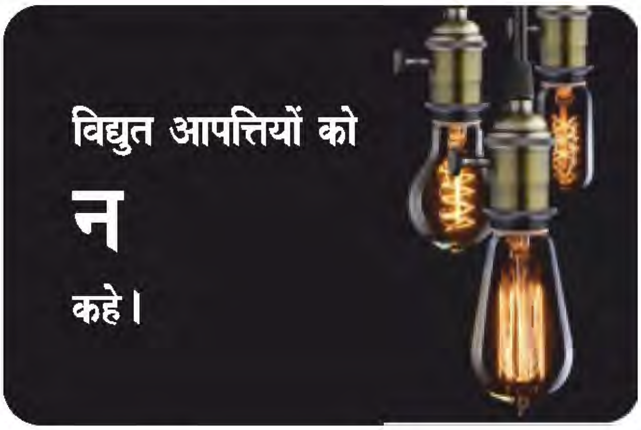

उपकरणों का सुरक्षित उपयोग सुनिश्चित करें। सभी लाभों को प्राप्त करने केलिए एक सरल सा पुनःडिजाइन किया गया है जो पहले भी उपलब्ध था। नए संस्करण में एक साधारण दो पिन संरचना को बनाए रखा जाता है और डबल इंसुलेशन सुनिश्चित किया जाता है ताकि ग्राउंडिंग द्वारा पहले प्राप्त किए गए समान प्रभाव/ सुरक्षा प्रदान की जा सके।

उद्योगों में उपयोग किए जाने वाले कई नए छोटे बिजली के उपकरणों में प्लग पर ग्राउंडिंग का तीसरा पिन नहीं है। कुछ विशिष्ट उदाहरण के रूप में ग्राइंडर, ब्लो ड्रायर, ड्रिल और अन्य बिजली उपकरण हैं। विनिर्माण यह सुनिश्चित करता है कि इस प्रकार के उपकरण 'डबल इंसुलेटड' है।

इसके अलावा डबल इंसुलेशन उपकरण उपयोगकर्ता को बिजली के झटके से बचाता है ताकि बाहरी आवरण बनने की किसी भी संभावना को रोका जा सके (विद्युत तार आवरण को स्पर्श नहीं कर सकता भले ही अंदर का तार ढीला हो जाएं), इस प्रकार एर्थ कनेक्शन की आवश्यकता समाप्त हो जाती है। विद्युत भागों और उपयोगकर्ता के बीच इंसुलेट सामग्री की कम से कम दो परतें होने पर, या प्रबलित इंसुलेशन का उपयोग करके कम से कम भाग में प्राप्त किया जाता है। मानकों के अनुसार, एक डबल इंसुलेटड उपकरण को क्लास II या डबल इंसुलेटड या डबल इंसुलेशन प्रतीक को (एक वर्ग के अंदर एक वर्ग) वहन करेगा।

एच एस ई (स्वास्थ्य और सुरक्षा कार्यपालक) उनकी साइट पर नए उपकरणों केलिए प्रक्रिया की रूपरेखा तैयार करते हैं : 'नए उपकरणों को एक सुरक्षित स्थिति में आपूर्ति की जानी चाहिए और अनौपचारिक पोर्टेबल उपकरण निरीक्षण या परीक्षण की आवश्यकता नहीं होनी चाहिए। ' हालांकि सामग्री को सुरक्षित रूप से लेबल करने और क्षतिग्रस्त न होने के लिए एक साधारण प्रत्यक्ष जाँच की सिफारिश की जाती है।

बुद्धि और ताकत

विष्णु टी
वेल्डर व फिट्टर

सुबह का समय था। गुरूजी अपनी कक्षा में पधारे। सब बच्चों ने गुरूजी को प्रणाम किया। गुरूजी ने पढाना शुरू किया।

गुरूजी : बच्चों! आज हम देखेंगे कि बुद्धि किस तरह शरीर की ताकत से ज्यादा बडी होती है। मैं तुम्हें एक कहानी सुनाता हूँ।

एक्ष जंगल में एक भोला- भाला कछुआ रहता था। उसी जंगल में दो हाथी रहते थे जो बडे अच्छे दोस्त थे। पर वे इतने घमंडी थे कि उनसे कमजोर जानवरों का वे मजाक उडाते थे। पर कछुआ बहुत समझदार था। वह उन हाथियों को एक सबक सिखाना चाहता था। उसने उनके समाने दोस्ती का हाथ बढाया। लेकिन उन हाथियों ने उसका मजाक उडाया। कछुए ने उन्हें चुनौती दी कि वह यह साबित कर देगा कि उन हाथियों से शक्तिशाली वह है कुछ देर बाद कछुआ एक बडी रस्सी लेकर आया। उस रस्सी का एक छोर हाथियों को दिया। फिर उनसे कहा अगर तुम में से कोई इस रस्सी से मुझे खींचकर ले जाओंगे तो वह शक्तिशाली होगा। पर अगर कोई मुझे नहीं खींच सका तो मैं यह मानूंगा कि तुम जमीन के जानवर और मैं पानी का जानवर हूँ। तुम जमीन से और मैं पानी में से मुकाबला करूँगा। तो क्या तुम लोग मुकाबले केलिए तैयार हो ? हाथियों ने सोचा कि ये भला छोटा जानवर उनका क्या बिगाड लेगा ? और वे तैयार हो गए। कछुआ जल्दी से पानी में जाकर उसने रस्सी को एक बडे पत्थर से बांध दिया। वहाँ ऊपर हाथी खींचे जा रहा था। लेकिन रस्सी खींच ही नही पा रहा था। दोनों हाथियों ने सोचा कि 'कछुए को इतनी शक्ति कहाँ से आई। जरूर ये कछुए कोई जादूगर है।' अच्छा होगा कि हम हार मानकर इस कछुए से दोस्ती कर ले। जब हाथियों ने हार मान ली तो कछुए बाहर आया और वे सब दोस्त बन गए। हाथियों ने उसकी शक्ति का रहस्य कछुए से पूछा तो कछुए ने जोर जोर से हँसकर उन्हें सारी बात बता दी। तब हाथियों को शर्म आई और उनका घमंड भी कम हो गया। तब से वे अच्छे दोस्त बन गए ।

तो बच्चों! इससे हमें यह सीख मिलती है कि **"बुद्धि ताकत से बडी होती है"**।

सपने

चाँद का टुकडा हुआ
प्रकाश तुम्हारे दिलरूबा चेहरे
पर डालने को-
देखकर मेरा मन-
पुलकित हुआ।
क्या तुम चाँद की
प्रिय प्यारी हो?
मैं समझता हूँ कि
यह गलती है कि मैं
तुम्हें छूना चाहता हूँ !
पर अभी नहीं
तुम मेरे पास जरूर आओगी
मैं तुम्हारे गाल को चूमूँगा।
पर ये सब एक सपने के समान
मै अपने झरोखे से देखता हूँ।

वैशाख के वी
उच्च प्रशिक्षार्थी

सूचना का अधिकार - सार्वजनिक कामकाज में पारदर्शिता और शासन की दिशा में एक कदम

अश्विन शर्मा एम
सहायक कंपनी सचिव

भारत के संविधान की प्रस्तावना भारत को संपूर्ण प्रभुत्व-संपन्न, समाजवादी, धर्मनिरपेक्ष और लोकतांत्रिक गणराज्य घोषित करती है और अपने समस्त नागरिकों के न्याय, स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व को सुरक्षित करती है । भारत एक लोकतंत्र है जहां सरकार लोगों के द्वारा, लोगों से और लोगों केलिए बनाई जाती है । लोकतंत्र शब्द अपने आप में पारदर्शिता, निष्पक्षता, जवाबदेही और सुशासन केलिए प्रेरित करता है । सरकार लोगों के कल्याण केलिए बनाई गई है और लोगों द्वारा प्रदान किए गए धन पर चलती है । इसलिए, नागरिकों को यह जानने का पूरा अधिकार है कि उनके पैसा का सही उपयोग हो रहा है या नहीं । आसान समझ के लिए, सुशासन का उद्देश्य लोगों की आवश्यकताओं की पहचान करना और देश में लागू होनेवाली नीतियों और निर्णयों में उनके विचारों को शामिल करना है, जो पारदर्शिता और जवाबदेही द्वारा सुगम है । उपरोक्त को ध्यान में रखते हुए, दिनांक 15 जून 2005 को सूचना का अधिकार अधिनियम लागू किया गया और 12 अक्तूबर, 2005 से प्रभावी हो गया ।

सूचना का अधिकार अधिनियम जम्मू और कश्मीर सहित पूरे भारत में फैला हुआ है । अधिनियम भारत के प्रत्येक नागरिक को निर्धारित शुल्क (वर्तमान में, 10 रुपए) के साथ लिखित रूप में एक अनुरोध भेजकर एक सार्वजनिक प्राधिकरण से सूचना प्राप्त करने का अधिकार देता है । नागरिकों को सूचना तक पहुँचने केलिए बहुत कम विवरण देने की आवश्यकता है और यहां ध्यान देनेवाली बात यह है कि उन्हें सूचना मांगने केलिए कोई कारण बताने की आवश्यकता नहीं है, जो नागरिकों को आरटीआई अधिनियम के माध्यम से सूचना तक पहुंच बनाने केलिए प्रोत्साहित करेगा जो बदले में पारदर्शिता सुनिश्चित करेगा और अपने कार्यों केलिए सार्वजनिक प्राधिकरण पर जवाबदेही तय करेगा ।

भले ही सूचना का अधिकार अधिनियम 2005, नागरिक को सूचना प्राप्त करने का अधिकार देता है, लेकिन सार्वजनिक प्राधिकरण के कीमती समय और संसाधनों के दुरुपयोग से बचने के लिए, नागरिकों को सूचना प्रदान करने की वास्तविक लागत के लिए शुल्क का भुगतान करना आवश्यक है, जो कि सूचना आपूर्ति के तरीके के अनुसार बदलता रहता है । लोक सूचना अधिकारी (पीआईओ) जानकारी प्रदान करने के लिए भुगतान की जाने वाले शुल्क का विवरण सूचित करेगा। शुल्क का भुगतान केवल नकद, पोस्टल ऑर्डर, डिमांड ड्राफ्ट और बैंकर्स चेक के माध्यम से किया जाना है। सूचना का अधिकार अधिनियम के तहत शुल्क भुगतान का कोई अन्य तरीका स्वीकार नहीं किया गया है। शुल्क के भुगतान के लिए न्यायालय शुल्क टिकटों रसीदी टिकटों आदि का उपयोग नहीं किया जा सकता है। आरटीआई अधिनियम के तहत जानकारी प्राप्त करने के लिए भुगतान की जाने वाली अतिरिक्त शुल्क की वर्तमान दरें आपके संदर्भ हेतु नीचे दी जाती है।

प्रत्येक पृष्ठ के लिए (ए-4 या ए-3 आकार के पेपर में)	2 रुपए प्रति पृष्ठ
बड़े आकार के पेपर में एक कॉपी के लिए	वास्तविक प्रभार या लागत मूल्य
नमूने या मॉडल के लिए	वास्तविक लागत या कीमत
डिस्केट या फ्लॉपी में दी गई सूचना के लिए	50 रुपए प्रति डिस्केट या फ़्लॉपी
प्रकाशन के रूप में सूचना	एक प्रकाशन के लिए निर्धारित मूल्य या प्रकाशन से सार के लिए फोटोकॉपी के दो रुपए प्रति पृष्ठ
अभिलेखों के निरीक्षण के लिए	
	पहले घंटे के लिए कोई शुल्क नहीं; और उसके बाद प्रत्येक घंटे के लिए 5 रुपए का शुल्क (या उसका कुछ भाग)

हालाँकि, सूचना का अधिकार अधिनियम, 2005 के तहत सूचना प्राप्त करने के लिए गरीबी रेखा से नीचे (बीपीएल) के नागरिक द्वारा कोई शुल्क दिया जाना आवश्यक नहीं है। यदि सूचना प्रदान करने के लिए निर्धारित समय की समाप्ति के बाद जानकारी प्रदान की जाती है, तो भी कोई अतिरिक्त शुल्क का भुगतान नहीं करना है।

सूचना का अधिकार अधिनियम, 2005 केंद्र सरकार के मंत्रालयों और विभागों के लिए केंद्रीय सूचना आयोग और राज्य सरकार के मंत्रालयों और विभागों के लिए राज्य सूचना आयोग द्वारा नियंत्रित किया जाता है। साथ ही, प्रत्येक लोक प्राधिकरण में लोक सूचना अधिकारी और अपीलीय अधिकारी नामित किए गए हैं। लोक सूचना अधिकारी (पीआईओ) इसकी प्राप्ति के 30 दिनों के भीतर मांगी गई सूचना प्रदान करने या अस्वीकार करने के लिए जिम्मेदार है। पीआईओ की कार्रवाई के खिलाफ पहली अपील प्रथम अपीलीय प्राधिकारी के पास है, जो उसी लोक प्राधिकरण में काम करने वाला व्यक्ति है जो पीआईओ के पद से ऊपर हो। दूसरी अपील केंद्रीय या राज्य सूचना आयोग को अधिमान्य होगी।

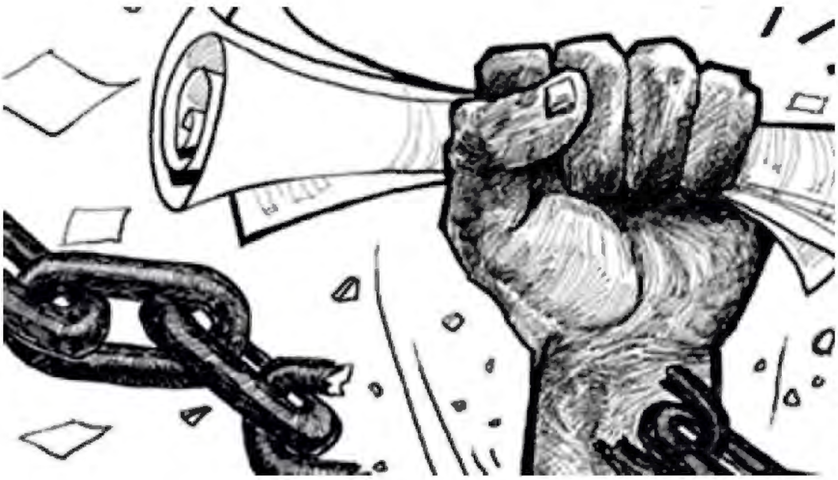

सूचना का अधिकार अधिनियम, 2005 का उद्देश्य लोक प्राधिकरण द्वारा रखी गई सूचना के प्रकटीकरण से है, लेकिन लोक प्राधिकरण ऐसी जानकारी भी रखता है जिससे देश की संप्रभुता और प्रतिष्ठा को हनन पहुंचता हो या किसी तीसरे पक्ष से संबंधित जानकारी या व्यावसायिक आत्मविश्वास, व्यापार रहस्य, बौद्धिक संपदा आदि से संबंधित जानकारी। भारत के नागरिकों को सरकार के मामलों के बारे में जानने का अधिकार है लेकिन ये अधिकार पूर्ण नहीं हैं और इसे असाधारण परिस्थितियों में प्रतिबंधित किया जा सकता है। इसके मद्देनजर, धारा 8 को सूचना का अधिकार अधिनियम, 2005 में डाला गया है, जो कुछ सूचनाओं को प्रकटीकरण से बचाता है। हालांकि, सूचना का खुलासा किया जा सकता है अगर लोक हित संरक्षित हितों को नुकसान पहुंचाता है। इसके अलावा, सूचना का अधिकार अधिनियम, 2005, केंद्र सरकार द्वारा स्थापित खुफिया और सुरक्षा संगठनों पर लागू नहीं होगा, जैसा कि अधिनियम की दूसरी अनुसूची में उल्लिखित है।

कार्मिक और प्रशिक्षण विभाग, कार्मिक, लोक शिकायत और पेंशन मंत्रालय ने ***आरटीआई ऑनलाइन*** नाम से एक डिजिटल पोर्टल स्थापित किया है जो आरटीआई अनुरोधों का इलेक्ट्रॉनिक दाखिला करने की सुविधा प्रदान करता है। अनुरोधकर्ता, अनुरोध दर्ज करते समय उक्त पोर्टल के माध्यम से शुल्क का भुगतान भी कर सकता है।

इसके अलावा, आरटीआई अधिनियम ने लोक प्राधिकरणों को सूचना नियमावली के रूप में अपनी वेबसाइटों पर अनिवार्य जानकारी प्रकाशित करने के लिए बाध्य कर दिया है, जिसमें लोक प्राधिकरण, उसके कार्यों और कर्तव्यों, नियमों और विनियमों, नियमावली और अभिलेखों, उसके अधिकारियों और कर्मचारियों की निर्देशिका, अधिकारियों, उपलब्ध योजनाओं आदि के विवरण होने चाहिए।

भले ही सूचना का अधिकार अधिनियम लोक प्राधिकरण के कार्यों को विनियमित करने के लिए लोगों के हाथों में एक शक्तिशाली उपकरण है, लेकिन ऐसी घटनाएं हैं कि लोगों द्वारा अपने निजी लाभ के लिए अधिनियम का दुरुपयोग किया जाता है। आरटीआई अधिनियम का उपयोग केवल सूचनाओं तक पहुंचने के लिए किया जा सकता है और

आरटीआई अधिनियम, 2005 के तहत प्रश्नों और शिकायतों को संबोधित करने के लिए नहीं किया जा सकता है। हालांकि, नागरिक पी जी पोर्टल के माध्यम से कार्मिक, लोक शिकायत और पेंशन मंत्रालय के तहत केंद्रीयकृत लोक शिकायत निवारण और निगरानी प्रणाली के साथ अपनी शिकायतें दर्ज कर सकते हैं। ऐसे उदाहरण भी हैं जहां सूचना योग्य मामलों में जानकारी से इनकार किया गया था।

फिर भी इसमें कोई संदेह नहीं है कि आने वाले वर्षों में सूचना का अधिकार अधिनियम, पारदर्शिता और जवाबदेही लाकर सार्वजनिक कामकाज में सुशासन की सुविधा प्रदान करेगा, जिससे सरकारी तंत्र में भ्रष्टाचार की घटनाओं में कमी आएगी।

फ्लो चार्ट- सूचना और समयसीमा प्राप्त करने की प्रक्रिया

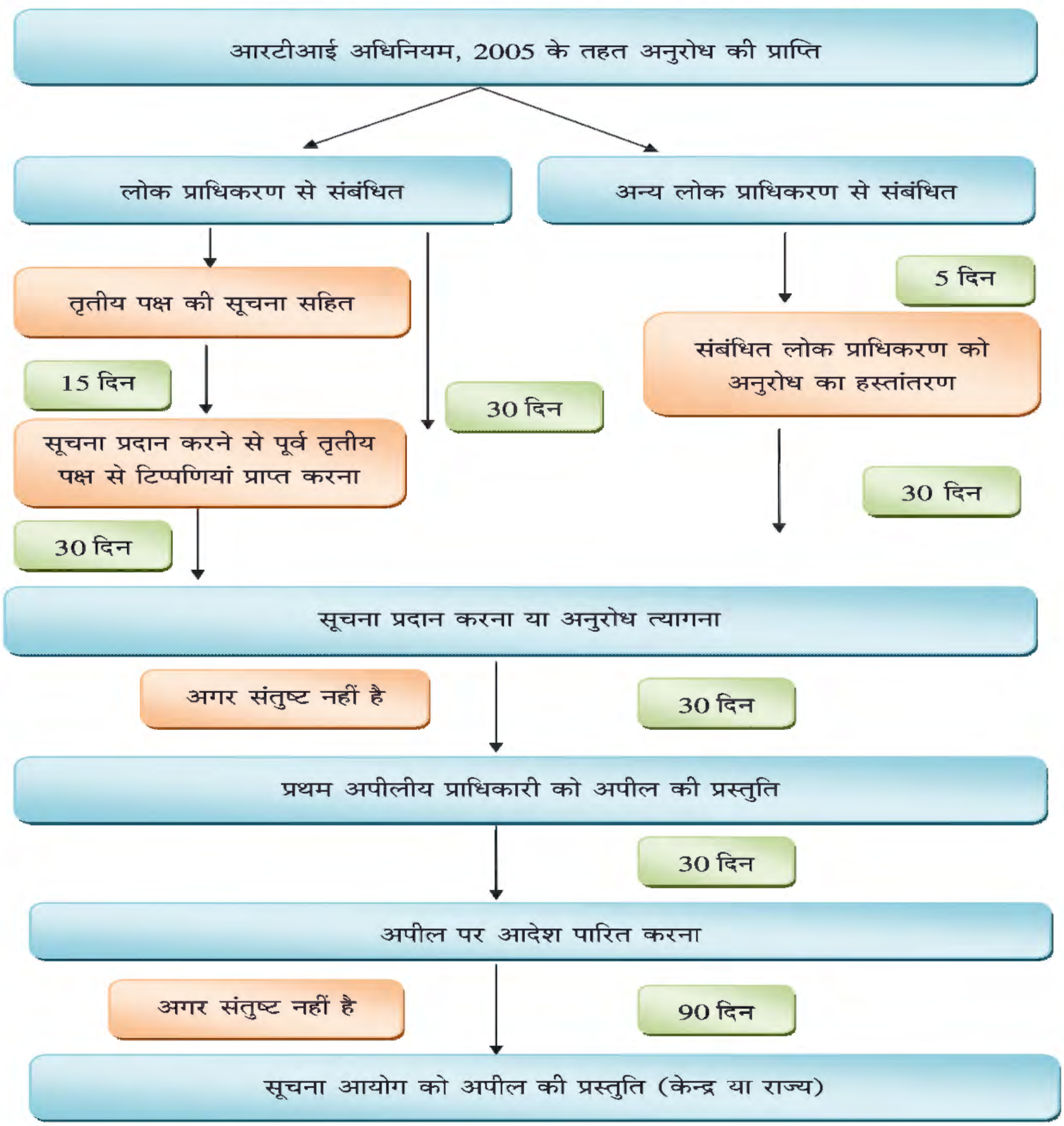

कोविड और ऑनलाइन शिक्षा

दिव्या पी मुरली
आशुलिपिक

कोविड 19, अनदेखी गुप्त आपातकाल पूरी दुनिया पर हावी हो गई है और वैश्विक परिदृश्य को काफी बदल दिया है । दुनिया अभी भी दुविधा में है और घातक वायरस को दबाने और परास्त करने केलिए जी जान से लड रही है। यह सबसे बुरा परिदृश्य है, जिसे हम झेल रहे हैं और जिसने आर्थिक दृष्टिकोण, स्वास्थ्य धारणा और समग्र रूप से पूरे जीवन को प्रभावित कर दिया है ।

वैश्विक अर्थव्यवस्था सुस्त है और लोग अपनी मुस्कुराहट को भूल गए हैं । भलाई को छिपाते हुए, मुस्कुराहट और हंसी की जगह मास्क ने ले ली है। चेहरा आपकी आंतरिक भावना को दर्शाता है लेकिन अब मास्क ने आपके रूख को छिपा दिया है और छवि को हमसे छीन लिया है । ओह! स्नेह, आभार, मित्रता सभी सिर्फ दूरी पर व्यक्त किए जाने लगे हैं ।

शिक्षा क्षेत्र, अच्छे या बुरे के लिए एक बहुत बड़े बदलाव की ओर मुड़ गया है, जैसा कि अन्य सभी सीमांतों में दिखाई दे रहा है, सिर्फ हमारे सामने रहेगा तो केवल भविष्य ही ।

ऑनलाइन शिक्षा अब यहां प्रचलित हो गई है । पश्चिमी और यूरोपीय देशों से भिन्न, प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षा क्षेत्र में यह संकल्प ना हमारे लिए नई है। स्कूली वातावरण से शिक्षा की प्रतिछाया ऑनलाइन शिक्षा के क्षेत्र में बदल चुका है ।

ऑनलाइन प्रणाली का अच्छा भविष्य होगा और यह भविष्य में भी ऐसा ही रहेगा । हालांकि शिक्षा क्षेत्र कोविड के पूर्व परिदृश्यं में भी तेज़ी से सुधर रहा है लेकिन कोविड के बाद का परिदृश्य कुछ चुनौतिपूर्ण होगा । शिक्षा प्रदान करने की स्कूली प्रणाली, गरीबी, अज्ञानता या बुनियादी ढांचे की कमी के कारण हज़ारों बच्चे इससे वंचित हैं ।

ऑनलाइन शिक्षा बच्चों को खोज, आकलन और आत्मसात करने केलिए एक नई दुनिया को उजागर करती है । यह स्वयं ही सीखने में सहायक होती है और इससे एक व्यापक, संपूर्ण विवरण हासिल किया जा सकता है। एक व्यापक मंच पर विचारों का आदान-प्रदान अत्यंत महत्वपूर्ण है । अपनी भावों को प्रभावी ढंग से विकसित करके संभाव्य शिक्षा को नई ऊंचाइयों तक पहुँचाया जा सकता है । यह सभी के लिए समान रूप से प्रदान किया जाना चाहिए और किसी को भी इससे वंचित और अस्वीकार्य नहीं रखना चाहिए।

ऑनलाइन शिक्षा के सभी सुविधाओं के बावजूद, स्कूली जीवन का हर पल हमेशा हमारे जीवन का सुनहरा दिन बना रहेगा । पवित्र छात्र-शिक्षक संबंध, छोटी-छोटी शरारतें, दोस्ती, स्नैक्स और लंच बॉक्स, स्कूल बैग, खेल का मैदान, वर्दी, स्कूल की घंटी आदि सभी आपके बच्चों केलिए बीतीं यादें होंगी। यह सब अब कमरे में सीमित, कंप्यूटर, प्रिंटर, वाईफाई में रूपांतरित हो चुका है ।

उम्मीद है कि *लॉकडाउन, संगरोध क्षेत्र, आर्थिक आपदा, संकट, तनाव, अलगाव आदि भविष्य में दूर कर दिए जाएंगे और मुस्कान, हँसी, प्यार, खुशी, दोस्ती के बंधन और समृद्धि फिर से लौट आएंगे ।*

सभी बेसब्री से इंतजार कर रहे हैं ....

ज़िंदगी एक नई मोड़ में

अलीना नीतू साबिन
लेखाकार

हमने ऐसी एक स्थिति की उम्मीद कभी नहीं की थी। यह वो स्थिति है जहां हम एक वास्तविक दुनिया में जी रहे हैं। बिना दुकानों के, बिना कार्यों के, बिना बाहर जाए। सब कुछ एक पल में बदल गया। हाँ, इस बदली दुनिया में जीना कुछ मुश्किल हो गया था। यह कितने आश्चर्य की बात है कि एक वायरस ने इतने छोटे से समय में इतनी जल्दी पूरी दुनिया पर कब्ज़ा कर लिया।

धीरे-धीरे लोग इन परिस्थितियों के आदी हो गए। कुछ ने तो इसका नकारात्मक रूप देखा और कुछ ने सकारात्मक रूप देखा। अगर हम हमेशा अच्छे चीज़ों का अनुभव करते रहे तो ज़िंदगी में मज़ा कहाँ ? ज़िंदगी का मज़ा तब आता है जब सब प्रकार की परिस्थितियों से गुज़रना पड़ता हैं। लेकिन मनुष्य एक ऐसा प्राणी है जो अपने भविष्य की कल्पनाओं और सपनों में जीता है।

हमें जीवन में कई आकस्मिक घटनाओं का सामना करना पड़ सकता हैं, लेकिन यह सब हम पर निर्भर है कि हम इसे किस नज़रिए से देखते हैं।

इससे हमें यह संदेश मिलता है - *"हमें जीवन को सकारात्मक तरीके से देखकर उसे आशाओं और सपनों से बुनकर आगे बढ़ाना चाहिए"* ।

मेरी पहली कविता

हस्ना पी एम
फिट्टर

हिंदी से प्यार इस मोड पर लाकर खडा करेगी जिसका मुझे अंदाजा ही नहीं था । कोचीन शिपयार्ड लिमिटेड में हिंदी माह समारोह 2019 के संबंध में विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया । इस प्यार की वजह से मैंने भी प्रतियोगिता में भाग लिया । जाहिर-सी बात है, इनाम भी मिला । अब आप सोच रहे होंगे इसमें कौन सी बडी बात है । बात इसमें नहीं है । कहानी तो अब शुरू होती है ।

दिनांक 21 नवंबर 2019 के ठीक एक हफ्ते पहले मुझे एक फोन कॉल आया । मैंने फोन उठाया । दूसरी ओर से आवाज आई - 'तुम्हें 21 को एफएसीटी उद्योगमंडल में जाना होगा ' । वो हमारी लिजा जी थी । वो सीएसएल की हिंदी अनुवादक है । लेकिन हमारे लिए लिजा मिस्स है, जो हमें हिंदी बोलचाल की क्लास लेती थी । मैंने पूछा, 'मैं और एफएसीटी क्यूं ?' उन्होंने कहा, 'संयुक्त हिंदी पखवाडा समारोह, 2019 के सिलसिले में हिंदी प्रतियोगिताओं का आयोजन हो रहा है, और उसमें तुम्हें कविता लेखन और उसके बाद कवि सम्मेलन में भाग लेना है ।

मैं और हिंदी कविता नामुमकिन !!!! मैं ने लिजा मिस्स से कहा, 'मुझे कविता लिखना नहीं आता' । उन्होंने कहा, 'कविता नहीं आती, हिंदी तो आती है । एक बार कोशिश कर के देख लो, कोशिश करने में क्या हर्ज है ।' मैंने कहा, 'कोशिश ही काफी है, तो, मैं तैयार हूँ । ' 'कोशिश' - ये बहुत अजीब चीज है । लोग कहते हैं, 'कोशिश करनेवालों की हार नहीं होती, इसी उम्मीद के साथ मैंने जाने की तैयारी की ।'

आखिर वो दिन आ ही गया । मैं और मेरे साथ श्री सुजीत जो डिजाइन विभाग में काम करते हैं, एफएसीटी पहुँचे । बडे आदर के साथ हमारा स्वीकार किया गया । हमने देखा सब लोग अच्छी तैयारी के साथ आए हैं । प्रतियोगिता शुरू होने को है, कागज दिया गया, शर्तें भी बताई गई । आखिर में विषय भी दिया गया, विषय था, 'बारिश' । कितना आसान विषय । समय शुरू हुआ, कागज और कलम उठाया और मैंने लिखना शुरू ही किया था कि, जो सोचा था सब भूल गई । कुछ भी याद नहीं आ रहा था । मैंने इधर-उधर देखा । सब लोग तेजी से लिख रहे थे । मैंने सुजीत को देखा वो भी लिख रहा था । मन को थोडी तसल्ली हुई थी कि कोई तो है जो सीएसएल की इज्जत बचा सके ।

आखिर का आधा घंटा बचा था तब जाकर दिमाग की घंटी बजी । जब स्कूल में पढती थी तब भी मेरे साथ ऐसा ही होता था । प्रश्नपत्र हाथ में आता और मैं सब भूल जाती, और आखिर के आधे घंटे में कुछ-न-कुछ लिखती । यहां भी ऐसा ही हुआ और मैंने लिखना शुरू किया और मैंने एक छोटी-सी कविता लिखी । कविता कुछ इस प्रकार का था :

बारिश

हे बरखा, मुझे प्यार है तुमसे,
अपने नन्हे बूंदों से सहलाओ न,
हर दिन हर पल इंतजार तुम्हारा,
आजा प्यारे ये दिल पुकारे ।

बचपन के वो दिन अनोखे,
तुझ संग बिताई पल वो सारे,
खेल-खेल में रूठते मनाए,
क्या हसीन पल थे वो सारे ।

भीग-भाग कर घर पहुँचे जब,
दर पर मां होती खडी,
कान पकड कर हर पल कहती,
मत खेलो इस बारिश में ।

वादा करती मां से फिर भी,
मन कभी न माने रे ।
तेरी आहट सुनते ही,
ये नादान दिल मचलता है ।

वक्त बदला, दिन ये बदले,
साल ये सारे गुजर गए ।
बचपन छूटा, जिन्दगी रूठी,
याद तेरी पर आए रे ।

एक बार तू आजा प्यारे
दिल की आस भुजा जा रे ।

बाद में जब परिणाम आया तब मुझे सांत्वना पुरस्कार प्राप्त हुआ । उसके बाद जो कवि सम्मेलन था उसमें भी हमने भाग लिया । मैंने अपनी पहली कविता पढी । वहां जाकर पता चला कविता क्या होती है । मैंने भी ठान लिया, आगे कोशिश करती रहूँगी । मेरी कोशिश रंग लाई, आज मुझे सीएसएल की हिंदी गृह पत्रिका 'सागर रत्न' में अपना लेख लिखने का मौका मिला, वो भी तस्वीर के साथ । वरना किसी अखबार के आखिरी पन्नों पर माला के साथ ही नजर आती ।

पोन्नमा के वी
कैंटीन कर्मचारी

हमारे कृषक

जेठ हो कि हो पूस, हमारे कृषकों को आराम नहीं है
छूटे कभी संग बैलों का ऐसा कोई काम नहीं है
मुख में जीभ शक्ति भुजा में जीवन, सुख का नाम नहीं है
वसन कहाँ? सूखी रोटी भी मिलती दोनों शाम नहीं ।
बैलों के ये बंधू वर्ष भर क्या जाने कैसे जीते हैं
बंधी जीभ, आंखे विषम गम सा शायद आंसू पीते हैं
पर शिशु का क्या, सीख न पाया जो आँसू पीना
चूस- चूस कर सूखा स्तन माँ का, सो जाता रो- विलाप नगीना
विवश देखती माँ आँचल से नन्हीं तडप उड जाती
अपना रक्त पिला देती यदि फटती आज वज्र की छाती
कब्र कब्र में अबोध बालकों की भूखी हड्डी रोती है
दूध - दूध भी कदम -कदम पर सारी रात होती है...

मेरी अनोखी दास्तां

प्रिया ए बी
इन्स्ट्रुमेंट मेकानिक

ये कहानी सालों पुरानी है । मैं दूसरी कक्षा में पढ रही थी । स्कूल में भाषण की प्रतियोगिता थी । विषय था, 'गांधी जी' । मेरे पापा के भाई ने भाषण तैयार कर के दिया था । मैंने खूब मन लगाकर पढाई की । आखिर वो दिन आ ही गया । जिन्दगी में पहली बार मंच में खडी थी । डर लग रहा था । फिर भी हिम्मत जुटाकर मैंने भाषण शुरू किया । पहले दो-तीन लाइन आसानी से कह दिया । जब मैंने सामने देखा सब लोग मुझे ही देख रहे थे । मेरी हिम्मत टूट रही थी । फिर आगे जो हुआ, मुझे अब सोचने पर हंसी आ रही है । उसके बाद डर के मारे मैंने भाषण को एक कविता के रूप में प्रस्तुत कर के मंच से भाग निकली । नीचे उतरने के बाद मैं खूब रोई । रो-रो कर मेरा बुरा हाल हो गया । जब परिणाम आया, तब मुझे सांत्वना पुरस्कार मिला - एक 'साबुन का डिब्बा' । मेरा पहला इनाम । उस दिन के बाद आज तक मैंने जितने भी कार्यक्रमों में भाग लिया, उनमें सब कोई न कोई इनाम के बिना मैं कभी वापस नहीं लौटी ।

वर्ष 2018 की बात है, सीएसएल में हिंदी पखवाडा समारोह के अंतर्गत आयोजित की गई प्रतियोगिता में मैंने भाग लिया । हिंदी भाषा की ज्यादा जानकारी नहीं थी, फिर भी हमने भाग लिया, निबंध रचना और सुगम संगीत में । मुझे सांत्वना पुरस्कार मिला । मैं बहुत खुश थी । उसके बाद हिंदी सीखने की इच्छा जागी । सिनेमा, सीरियल और गानों की सहायता से धीरे-धीरे हिंदी सीख ही रही थी कि, सीएसएल के हिंदी कक्ष ने बोलचाल की हिंदी कक्षा का आयोजन किया । हिंदी सीखने की इच्छा में मैंने उसमें भाग लिया । हमारी टीचर श्रीमती लिजा जी थी । टीचर ने एक महीने में इतनी अच्छी तरीके से समझाया की क्लास खत्म होते-होते इतना आत्मविश्वास जागा, 'हां, मैं भी हिंदी बोल सकती हूँ ।'

हिंदी सीखने की इच्छा जागने से पहले, अगर कोई हिंदी में बात करता तो मैं वहां से भाग जाती थी । लेकिन क्लास के बाद मैंने भी उनसे बात करना शुरू किया ।

जिन्दगी में ये दो अनुभव मेरे लिए बहुत महत्वपूर्ण है । मैंने कभी नहीं सोचा था कि मैं भी हिंदी सीख सकती हूँ । आज मुझे ये मौका मिला है कि मैं सीएसएल की हिंदी पत्रिका में अपनी कहानी लिखूँ ।

यात्रा

शिबु टी के
वेल्डर व फिट्टर

यात्रा कितनी छोटी-सी शब्द है
लेकिन पता नहीं इसकी गहराई
कहीं ओर शुरूआत होती है इसकी
लेकिन पता नहीं उसका अंत
यात्री के बीच में तो आते हैं कई
कभी-कभी साथ होती है
लेकिन कहीं पर बिछुड जाती है ।

यात्रा कितनी छोटी-सी शब्द है
लेकिन पता नहीं इसकी गति
कभी-कभी चलती है तीव्र
कभी तो चलती धीमी गति से
केवल उसी को पता है इस यात्रा का लक्ष्य
वो पूरे जगत का संचालक होता है

यात्रा कितनी छोटी-सी शब्द है
लेकिन पता नहीं उसकी राहें
कभी तो आसानी से चलती हैं
कभी-कभी मुश्किल हो जाती है
बीच में आती है पत्थर रूपी तूफानें
जिसे पार करके जाना ही यह यात्रा है

केवल एक ही बात पता है
कि सभी को यह यात्रा करनी ही चाहिए
करनी ही चाहिए ये यात्रा
हिम्मत से ईमानदारी से मंजिल तो तरह-तरह की होंगी
लेकिन 'यात्रा' उतनी छोटी नहीं है ।

एक लॉकडाउन यादगार

श्रीजित्त सी एस
वेल्डर व फिट्टर

लॉकडाउन के समय, घर पर बेकार बैठते वक्त, कुछ करने को मन लगा । मेरे पास जो थोडी-सी जगह थी, उसमें एक छोटे तरीके से बागबानी और मछली पालन चल रहा था । उसका कुछ विस्तार करते हुए मैंने समय बिताया, तब अचानक फिर से लॉकडाउन आगे बढा । मैंने सोचा कि मैं जो काम करता आया हूँ वही करूँ । मैंने घर केलिए एक छोटी-सी सीढी और स्टैंड बनाने का सोचा, लेकिन मेरे पास वेल्डिंग मशीन नहीं था । मैंने कई बार सोचा था, कि एक छोटा-सा वेल्डिंग मशीन खरीद लूँ । फिर मैंने सोचा कि यह बेकार का खर्च होगा ।

लॉकडाउन पर छूट मिलते ही थोडी मेहनत के बाद मशीन और सामग्रियों को एकत्रित किया । तब मुझे शिपयार्ड की याद आई, वहां कितनी सामग्रियां बेकार पडी हुई हैं। उसमें से तो कई उपयोगी वस्तु मिल सकता है, नहीं तो बना सकते हैं । ऐसी बेकार वस्तुओं का बेहतर उपयोग करनेवाले हैं, हमारे ऑफिसर अनीष सर । करीब एक साल पहले उन्होंने मुझे एक काम सौंपा । एडीएस, टीडीवी में से काटकर अलग किए हुए एक डक और कुछ अन्य वस्तुओं को मिलाकर एक प्लैटफॉर्म बनाने का काम। उसमें 4 हुक भी लगाना था । इसका उपयोग हम फॉर्क लिफ्ट क्रेन को उठाने और आवश्यक सामग्रियों को लादने केलिए भी कर सकते हैं। बहुत कुछ सुझाव सर ने दिया, और मेरे सहायक इंजीनियर सुब्रमण्यन जी और गोपी जी ने भी मुझे इसके लिए पूरा सहयोग दिया । मेरे साथ मिथुन और मुरली ने काम शुरू किया । कुछ समय बाद, सुरक्षा अधिकारी श्री सलीन सर भी आए, और उन्होंने भी कुछ सुझाव दिए ।

सलीन सर ने यह सुझाव दिया कि फॉर्क लिफ्ट जिस प्रकार काम करता आया है, उस प्रकार करने से वह खतरनाक होगा। यह सुनते ही मुझे लगा कि मुझसे यह नहीं होगा। इसे मैं किसी और को सौंपता हूँ। लेकिन सलीन सर ने मुझे आगे बढने की प्रेरणा दी। उन्होंने कहा, ‘कोशिश तो करो, कामयाब न होने पर भी कोई बात नहीं, सब लोग हर काम में सफल थोडी न होते हैं ’। तब हमने काम शुरू किया । तभी हिंदी क्लास (मैंने कुछ दिनों पहले हिंदी क्लास केलिए नाम दिया था) भी शुरू हुई। हिंदी पढने की इच्छा थी । स्कूल और कॉलेज में पढते वक्त एनसीसी की ओर से केरल के बाहर एक-दो कैंपों में भाग लिया । उसमें एक महाराष्ट्र के कोलापूर में आयोजित छत्रपति शिवाजी ट्रयल ट्रेकिंग कैंप था । इसमें राष्ट्रीय एकता के सिलसिले में भारत के कई कोनों से छात्र मौजूद थे । वे अलग-अलग भाषी के होने पर भी हिंदी आम रूप से उपयोग कर रहे थे। उस समय मैंने थोडा हिंदी बोलना सीखा ।

कंपनी (सीएसएल) भी जब इस तरह का मौका दे रहे हैं, तो उसे गँवाना नहीं चाहिए । कुछ भी हो, मैं भाग लूँगा । मैंने सोचा कि क्लास अगर ‘बोरिंग’ है, तो छोड दूँगा । लेकिन एक अच्छी टीचर ने क्लास बहुत ही रोचक तरीके से लिया । एक भी क्लास को ‘मिस्स’ नहीं होने दिया । मुझे एलपी स्कूल में पढानेवाली मोली टीचर, यूपी स्कूल में पढानेवाली सुमा टीचर, हाईस्कूल में पढानेवाले पीतांबरन सर और एकाउंडन्सी पढानेवाले वेणु सर की याद आ गई । हिंदी क्लास बहुत ही अच्छे तरीके से संपन्न हुआ । मैं थोडा बहुत अच्छे तरीके से अक्षरों को पढने और हिंदी बोलने लगा । स्कूलों और कैंपों में पढी हिंदी को तो मैं भूल ही गया था । हिंदी क्लास के बाद ही फॉर्क लिफ्ट का काम भी सभी के सहयोग से संपन्न हो गया था । उसका नामकरण भी हो गया, ‘फॉर्क लिफ्ट कैरियर’ । सभी सुरक्षा सावधानियां पूरी हुई । उसे बिल्डिंग डॉक में अच्छी तरह से इस्तेमाल किया गया । महाप्रबंधक, सहायक प्रबंधक बाकी सभी की तरफ से शुभकामनाएं मिली, इसके अलावा सुरक्षा विभाग से ‘सम्मान’ भी मिला । बिना किसी खतरे के, सभी सुरक्षा सावधानियों सहित एक उपकरण सभी के सहयोग से बनाने में मुझे गर्व है ।

हम अपने बच्चों को पुराने जमाने की कई खतरनाक बीमारियों से लडने केलिए जन्म लेते ही टीकाकरण करवाते हैं । ऐसे ही हमारे स्वास्थ्य परिचारक भी इस महामारी कोरोणा केलिए कोई टीका खोज निकालने में कामयाब हो सके, इसकी मैं तहे दिल से कामना करता हूँ...

जय हिंद ।

उम्मीद.. सफलता का एक मार्ग

गौरीनंदन
आतिरा आर एस का सुपुत्र

एक माँ और उसकी छोटी सी बेटी एक ऐसे घर में रहते थे जो बहुत ही गंदा था और जहाँ शायद ही कोई रह सकता था। उनके पास पहनने के लिए न कपड़ा था, खाने के लिए न खाना था और बच्ची को स्कूल भेजने के लिए न पैसा था। उनके पास था, तो बस वो फटा-पुराना कपड़ा और *'उम्मीद'* कि एक न एक दिन उनका भी अच्छा दिन आएगा। उनकी मदद के लिए भी कोई नहीं था। एक दिन वे एक पगडंडी पर बैठे थे और एक बुज़ुर्ग व्यक्ति और उनकी पोती वहाँ से गुज़र रहे थे, अचानक उनकी नज़र उस महिला और उनकी छोटी बेटी पर पड़ी। बुज़ुर्ग व्यक्ति वास्तव में उनकी हालात के बारे में जानना चाहता था लेकिन अपनी बड़ी हैसियत की वजह से कुछ पूछ न सकने के कारण वे निराश हो गए। कुछ दिनों के बाद वह महिला उस अमीर बुज़ुर्ग के घर काम की तलाश में पहुँच गई। उसे देखते ही दादा जी उसकी मदद करने के लिए तत्पर हो गए और कहा, *"ठीक है, कल से आकर रोज़ का काम शुरू करना।"* अगले दिन से ही महिला ने दादाजी द्वारा दी गई नौकरी शुरू की, कुछ समय बाद दादाजी और उनकी पोती ने उत्सुकता महसूस की और उसकी बेटी के बारे में पूछताछ की, उन्होंने पूछा ....*"आपकी बेटी कहाँ है और वह कहाँ पढ़ रही है?"*

उसके पास कहने के लिए शब्द नहीं था, लेकिन उसने अपनी पूरी ताकत और साहस बटोरकर कहा कि, *''नहीं साहब, वह पढ़ाई के लिए कहीं नहीं जा रही है, मेरे पास उसकी नई वर्दी और किताबें खरीदने के लिए पैसा कहाँ?"* महिला की बातें सुनकर दादा जी और उसकी पोती दोनों को बहुत ही दुख हुआ और अपनी पोती के आंसुओं को देखकर वे शांत नहीं रह सके और कहा, *"ठीक है! मैं देखता हूं कि क्या किया जा सकता है? कल से आपकी बेटी उसी स्कूल में जाएगी, जहां मेरी पोती जाती है, वही सीखेगी जो वह सीखती है और आपकी बेटी वह सब कुछ करेगी जो मेरी पोती करती है, मैं पूरा खर्च वहन करूंगा, क्या यह आपको मंजूर है?' ओह!.... मैं क्यों उनसे पूछ रहा हूँ, कितना मूर्ख हूँ मैं? तो सब तय है जल्दी अपनी बेटी को लेकर आओ, हम अभी जाकर उसके लिए वर्दी, किताबें और सभी आवश्यक सामग्री खरीदेंगे, यही नहीं आज से तुम दोनों इसी घर पर रहोगे '*। महिला इतनी खुश थी कि उसे नहीं पता कि वह कोई सपना देख रही थी या सच में हो रहा था। वह सोच रही थी कि, *"हे भगवान! मैं यह सब वापस कैसे चुका पाऊँगी या क्या मुझे वापस चुकाने का मौका मिलेगा?"* आखिरकार, वह बिलकुल सपना नहीं था। महिला और उसकी बेटी उस दिन से खुशी-खुशी उनके साथ रहने लगी।

कहानी की सीख......... "कभी भी उम्मीद मत छोड़ो और अपने ऊपर के विश्वास को कभी कमज़ोर मत होने दो"।

तिनका कबहुँ ना निन्दिये, जो पाँवन तर होय,
कबहुँ उडी आँखिन पडे, तो पीर घनेरी होय।

अर्थः कबीर दास जी कहते है कि एक छोटे से तिनके की भी कभी निंदा न करो जो तुम्हारे पांवो के नीचे दब जाता है। यदि कभी वह तिनका उडकर आँख में आ गिरे तो कितनी गहरी पीडा होती है।

रेसिपी

चिकन कबसा

सामग्री

1. 1/4 कप घी/ तेल
2. 2 किलो चिकन बडे टुकडो में काटा हुआ
3. 1 प्याज बारीक कटा
4. 8 फली लहसुन
5. 1/4 कप टमाटर प्यूरी
6. 1 टमाटर बारीक कटा
7. 1सूखा हुआ काला चना
8. 2 कसा हुआ गाजर
9. 2 लौंग
10. 1 चुटकी जायफल कद्दूकस किया
11. 1/4 छोटा चम्मच जीरा
12. 6 काली मिर्च
13. 4 कप गर्म पानी
14. 1 चिकन क्यूब
15. 2 कप बासमती चावल
16. 10-12 किशमिश
17. 1 बडा चम्मच कबसा मसाला मिक्स
18. नमक स्वाद केलिए

तहसीना टी
तस्लीक टी के की सुपुत्री

बनाने की विधि

1. कबासा मसाला मिश्रण और नमक के साथ साफ चिकन के टुकडों को मिलाए, इसे पच्चास मिनट केलिए एक तरफ रख दें।
2. एक कडाई में तेल/ घी गरम करें, उसमें कटा हुआ प्याज, लहसुन, हरी मिर्च डालें और उसे तले। चिकन के टुकडे डालकर अच्छे से भुनें।
3. टमाटर प्यूरी डालें, हिलाए और 2 मिनिट तक धीमी आंच पर पकाएं।
4. टमाटर, गाजर, लौंग, सूखा चना, सभी मसाले, काली मिर्च और नमक डालकर 2 मिनिट और पकाएं।
5. पानी और चिकन क्यूब जोडे। इसे धीमी आंच पर 15-20 मिनट तक ढककर उबाले और पकाना शुरू करें।
6. चावल डालें और सावधानी से हिलाएं। किशमिश जोडे, फिर से ढक दें और इसे 15 मिनिट या जब तक चावल धीमी आंच पर न हो जाए तब तक पकाएं।
7. चिकन के साथ एक सर्विंग प्लेट पर चावल रखें। हरी सलाद या घर पर बना टमाटर सॉस के साथ परोसे।

कोकिला का स्वर

श्रीलक्ष्मी एस एस
विष्णु टी की सुपत्नी

कोकिला देखो कोयल काली है पर
मीठी है इसकी बोली।
इसने तो कू-कु-कू-कु कर
आम की मिश्री घोली।

कोमल कोयल सच बताओ
क्या संदेश लाई हो
बहुत दिनो से आज फिर
इस डाली पर आई हो

क्या गाती हो किसे बुलाती
बतला दो कोयल रानी
प्यासी धरती पूछती
है क्या मेघों में पानी।

बहुत भली हो तुमने माँ की बात सदा ही है मानी
इसलिए तो तुम
कहलाती हो सब चिडियों की रानी।

हमें कोरोना को है हराना

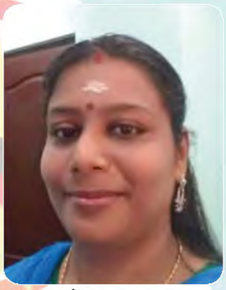

डॉ ज्योत्सना नायर
रमेश पी एस की सुपत्नी

हाय ये 2020 साल, जहां फैला कोरोना वायरस ।
शुरुआत हुई चीन में, बन गई सर्वव्यापि महामारी ।
स्वास्थ्य देखभाल करनेवाले डॉक्टर, नर्स, अटेंडर,
अम्बुलेंस वाहन चालक देखभाल कर रहे हैं मरीजों की।

हाय ये महामारी कोरोना, हमें इसे है हराना ।
साफ करनेवाले कर्मीदल पुलिस भी है सहायक,
सब कर रहे हैं टक्कर मुकाबला,
हाय ये महामारी कोरोना, हमें इसे है हराना ।

मास्क पहन कर है निकलना,
सैनिटाइजर का है प्रयोग करना,
सामाजिक दूरी को है निभाना,
हाय ये महामारी कोरोना, हमें इसे है हराना ।

अध्यापक वर्ग को भी है चुनौती
है छात्रों को घर से ही पढाना ।
रास्ते भी कठिन है मंजिले भी मुश्किल है,
हौसला अभी है बढाना, हमें कोरोना को है हराना ।

खामोशी

विजित के के
हृष्ना पी एम के पति

अकसर मेरे सपने खामोश थे,
न मिटनेवाली अनोखे वर्ण के थे,
यूँ ही उस दरवाजे की दरार से,
पुरानी यादें ताजा कर गई ।

अपनी ख्वायिशे जो कहना चाहती,
जो होठों तक कभी न आई,
अक्षरों की माला में पिरोये,
यादों की एक गठरी ।

परिपक्व दिन गुजरते-गुजरते,
शिकायतों के फूल भी चुप हो गए ।
कलम की नोक पर छुपाया जो दर्द,
अनवरत बारिश की तरह बरस गए ।

संयुक्ता एस
अश्विन शर्मा एम की सुपत्नी

भारत की बेटी

जान थी वह माँ की
धडकन थी वह पापा की
कुंडली कह रही थी उसकी
मिलेगी उसे बहुत प्रसिद्धि
तो नाम रखा उसका ज्योति

हँसती खिलती पली बडी वह
कमी न लगाने दी उसे किसी जगह
हर क्षेत्र में सर्वश्रेष्ठ बनी वह
दोस्तों की भी प्यारी बनी वह
पढ- लिखकर डॉक्टर बनी वह

एक दिन, जा रही थी घर वापस
रात थी, तो बना वह दोस्त साहस
गाडी पकडी थी जिसमें छिपे थे वह राक्षस
अनजान थी वह कि ना मिलेगा अपनी जान वापस
गति पलटी गाडी की, आ गए बाहर वे राक्षस

दोस्त ने रोका, धडाम से गिरे वह मार खाकर
वह बेटी चीखी चिल्लायी, पर अब क्या अंतर
एक थी वह, छह थे राक्षस, दोनों में हुई लडाई भयंकर
निकृष्ट राक्षसों ने उठाया फायदा स्त्रीत्व का अंदर रही अंदर
निश्चल, निर्भाव, विकृष्ट फेंका उसे खुली सडक पर

भेडियों से निर्भय लडी वह अपने जान केलिए
सांस लेना भी मुश्किल था, सिर्फ अपने न्याय केलिए
निर्भया बन गई वह इस पूरी दुनिया केलिए
समाचार फैली, अत्यंत लज्जा जनक हो गया भारत केलिए
एक ज्योति उठी, आग फैली लोगों में उसके न्याय केलिए

राक्षस सहमा गए यह देख -देखकर
कुबूल किया अपना अपराध अदालत पर
लटकी फाँसी की ठोरी उनके गले पर
हाय पर नही रही वह इस खुशी के अवसर पर
भगवान ने दी मुक्ति उसे, उसकी पीडा खत्म कर

ज्योतिषी का ज्योतिष सही निकला
नाम इतिहास में उसका रचा गया
प्रार्थना यही है मेरी, ना किसी बेटी को मिले ऐसी प्रसिद्धि
रहे एक ही बहादुर वीर निर्भया
यही वह कथा उस भारत की बेटी की।

"मैं किसी समाज की उन्नति को इस आधार पर मापता हूं कि उस समाज में स्त्रियों की प्रगति कितनी हुई हैं।"

डॉ.बी आर अंबेडकर

खास दोस्त

अश्विन विजित
हम्ना पी एम का सुपुत्र

ये कहते है सभी, मुश्किल है बड़ी
ढूँढने से न मिले, प्यारी सी ये यारी ।
जब मुश्किल थी बडी, जो
साथ थी खडी,
हाथ थामें मेरे, प्यारी-सी ये यारी ।

जिन्दगी के सफर में, एक एहसास हुआ है,
कहीं मिलेगी, तुमसे बेहतर कोई,
उससे भी ज्यादा मैंने तुम में पाया है,
अपना वो सपना, प्यारा-सा याराना ।

जब अपनी बरकतें शुमार करना रोक दूँ,
वहां है एक चीज, जिसकी आवाज गूँजती,
मैं हमेशा शुकर गुजार हूँ, एक-
दोस्त केलिए, जो मैंने तुम में पाया ।

एहसान मंद हूँ, उस खास वक्त केलिए,
जो बाँटे हैं साथ हम ने,
वो पल जो हमें करीब लाए,
हमारी कह-कहों और आँसुओं से ।

शुकर गुजार हूँ किसी का, जो तुम्हें,
इतना मेहरबान और अच्छा बनाया ।
साथ अपने बेहतरीन लम्हों और
दुखों को भी जाहिर करना सिखाया ।
और, जब मैं अपनी जिन्दगी पर निगाह डालता हूँ,
आखिर क्या बात है ?
क्या मैं वाकई खुशकिस्मत था,
जो मैं, एक सच्चा, वफ़ादार दोस्त खोज सकूँ ।

मीठा दर्द

अश्वती के वी
वैशाख के वी की बहन

क्या तुम मुझे जानते हो?
मैं जीना चाहती थी तुम्हारे
साथ पर-
तूने मुझे मार डाला
तुम्हारे शब्दों से,
तुम्हारी नजरों से,
तुम्हारी करतूतों से
सब ने मुझे-
मार दिया
तुम्हारी यादों से ही बने हुए है
मेरे दिल की धडकन
की आवाज मेरे कानों में
आकर चिल्लाने लगा
मैं सोना चाहती थी,
पर मैं सो नहीं पाई
दिल की दर्द आँखों से
आँसू जैसा खून बहने लगा
आखिर मैं सो गई
कभी न जागने वाली
दीर्घ निद्रा में।

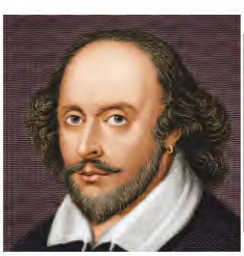

"नाम में क्या रखा है जिसे हम गुलाब कहते हैं उसे किसी और नाम से पुकारें तो भी वो उतना ही अच्छा महकेगा।"

- विलियम शेक्सपीयर

मेरा अनूठा सफरनामा

संदीप किरण
आतिरा ई एस के पति

सपनों की दुनिया में विचरण करनेवाला एक नाविक हूँ मैं, क्या यह महामारी मेरे जीवनयापन का अंत होगा ? मेरे कल तक के सपने तो डूब गए। आज यह सिर्फ एक आशा बनके

रह गई है कि मैं अपने प्रियजनों के पास वापस सही सलामत पहुँच सकूँ।

दुनिया भर में तेज़ी से बढ़ रही मृत्यु दर। पूरी दुनिया इस महामारी के सामने बेबस खड़ी है। हर कहीं मृत्यु की खबर ही सुनाई दे रही है। मैं समझ सकता हूँ कि उस शब्द की धार मन को कितना ठेस पहुँचाती है। *"लोका समस्ता सुखिनो भवंतु"* यही मेरे देश ने मुझे सिखाया है। दुनिया की भलाई केलिए अब मेरा हर पल प्रार्थना में समर्पित करता हूँ।

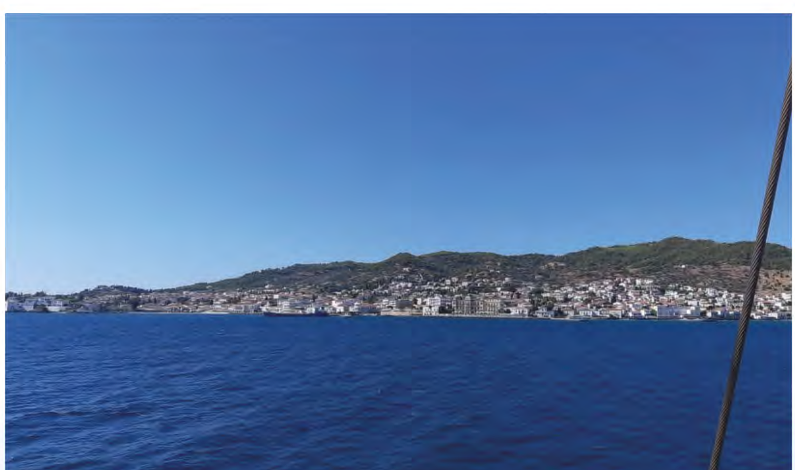

मैं अपने में ही सिमटने लगा मानों मेरे देखे हुए सपने अब निमज्जित हो गए हो। मेरी नज़रें प्रकृति की असीम सुंदरता पर अटक गई...। भूमध्य सागर के शानदार रंगीन नज़ारे...। ये सब मेरे सामने पहले से ही मौजूद थे लेकिन इसकी सुंदरता का एहसास मुझे अब हुआ। मानव केलिए भगवान द्वारा रचा गया चमत्कार.....।

ग्रीस जैसे प्राचीन शहर को छूकर आनेवाली ठंडी हवा ने मेरे नौके को तरंगों से मचला दिया। भोर की पहली किरण ने जब समुद्र की लहरों को चूमा तब मैं उसकी मनोहारिता में मुग्ध हो गया। बरसात की फुहार सागर की लहरों में अपनी एक मनमोहक छाप छोड़ जाती हैं जो क्षण भंगुर होते हुए भी मेरे मन को लुभा दिया।

सूरज के डूबने से पहले के इंद्रधनुषी रंगों की शोभा, और उसे हासिल करने के लिए अचल पानी पर छलांग मारते हुए डॉल्फिन ....।

अब मेरे सामने उबाऊ दिन नहीं है......।

हालात के साथ बदलना मानव केलिए अपनी जिंदगी से मिली सीख से बडी नहीं है जो विलंब से प्राप्त होने पर भी ईश्वर को धन्यवाद देना चाहता हूँ... ।

लेख

हाथी से जुनून.......

बिजीष के बी
सरिता जी के पति

हाथी........... हम केरलवासियों केलिए थल का सबसे बडा जानवर......... चाहे कितना भी देखें या सुने, हमेशा से हमारी जिज्ञासा असीम रहती है। एक बात तो हम निश्चित रूप से कह सकते हैं कि हाथी पृथ्वी पर किसी भी अन्य जानवरों की तुलना में बडे ही विस्मयपूर्ण तरीके से हमारे सामने है ।

ऐतिहासिक काल से ही हाथी के प्रति केरलवासियों का जुनून इतना अपार है कि मनुष्य और हाथी के बीच एक अटूट संबंध देखने को मिलता है । यही कारण है कि केरलवासियों को हाथी से इतना लगाव है ।

त्योहारों, विभिन्न क्षेत्रों के रीति-रिवाज़ों, पर्यटनों आदि के साथ पूरी तरह से जुड़े होने के कारण, *'गजराज'*, केरलवासियों के जीवन से इस तरह घुलमिल गया है कि उसने हर किसी के साथ एक अटूट रिश्ता कायम रखा है। साथ ही, त्योहारों और गजमेलों में हाथियों से संबंधित खबरों के प्रति केरलवासियों के बीच एक अनकही चाह है ।

हमारी वर्तमान स्थिति की ओर नज़र डालने पर हमें पता चलता है कि हमारे पास इतनी बडी गजसंपत्ति उपलब्ध थी। केरल की वर्तमान औपचारिक अनुमानों के अनुसार, पांच सौ से कम और अनौपचारिक रूप से देखा जाए तो लगभग एक हज़ार से कम पालतू हाथियां है जो मेरा सिर्फ एक अंदाज़ा है। आज, केरल का सबसे ऊंचा गजराज तेच्चीकोट्टुकाव देवस्वम का "तेच्चीकोट्टुकाव रामचंद्रन" (തെച്ചിക്കോട്ട്കാവ് രാമചന്ദ്രൻ) है। उम्र और आकार में सबसे छोटा, हाथी कोन्नी हाथी अभयारण्य केंद्र में है, जिसे हाल ही में मिला था ।

केरल में तेक्कडी, वयनाड, चालक्कुडी, अगस्त्यकूडम वनों में हाथी ज़्यादा पाए जाते हैं । एशिया का सबसे बडा पालतू हाथी "कंडम्बुल्ली बालनारायणन"'(കണ്ടമ്പുള്ളി ബാല നാരായണൻ) उत्तर भारत से केरल लाया गया था। हाथी दो प्रकार के होते हैं: उत्तर भारतीय हाथी और दक्षिण भारतीय हाथी। बिहार, असम, उत्तर प्रदेश के हाथी लंबे और उनके सिर छोटे होते हैं। हमारे यहां मौजूद हाथियों में ज्यादातर दूसरे राज्यों से आए हुए हैं ।

दक्षिण भारतीय हाथी दिखने में अधिक सुंदर होते है। आमतौर पर, केरल, कर्नाटक, तमिलनाडु की सीमाओं के जंगलों में रहनेवाले हाथियों को दक्षिण भारतीय हाथी के रूप में जाना जाता है । "नाणु एषुत्तश्शन श्रीनिवासन"

(നാണു എഴുത്തച്ഛൻ ശ്രീനിവാസൻ) केरल का सबसे वज़नदार हाथी है।

हाथियों को बड़े दांतवाले हाथी (കൊമ്പൻ), हथिनी (പിടി), छोटे दांतवाले हाथी (മോഴ) आदि में वर्गीकृत किया जा सकता है। बडे दांतवाले हाथी आकार में बहुत बडे और सुंदर होते हैं। दांतों का आकार और लंबाई हाथी की सुदंरता को तय करता है। पतले, लंबे दांतवाले हाथी को "चल्लीकोम्बन"'(ചുള്ളിക്കൊമ്പൻ) कहा जाता है। "चेरप्लशेरी पार्थन"'(ചെർപ്പുളശ്ശേരി പാർത്ഥൻ) जिसकी कुछ दिन पहले मौत हुई थी, ऐसा ही एक हाथी है।

हाथियों को वैज्ञानिक तरीके से देख भाल करने की व्यवस्था तमिलानाडु से लेकर पडोसी देश श्रीलंका और कुछ दूर के ताइलैंड में भी है, लेकिन केरल में ऐसी व्यवस्था क्यों नहीं है? सच बोलो तो, इस तरह का हाथी अभयारण्य केंद्र हमारे राज्य में भी होना चाहिए क्योंकि बहुत सारे जंगली हाथी हमारे यहां आते हैं और बिना उपचार के उसकी मौत हो जाती है ।

ऐसे घायल हाथियों को पहचानकर सरकार के हाथी अभयारण्य केंद्र जैसे कोन्नी और कोडनाड में लाया जाता है और वहां उसका उपचार किया जाता है। यहां तक कि जन्म लिए कुछ ही दिन, या महीनों के हाथी के बच्चों की जान भी बचाई गई है। जंगल में पाए गए घायल हाथियों को बेहोश करके इलाज किया जाता है। हाथियों को होने वाली एक बहुत ही गंभीर बीमारी है कब्ज़ (എരണ്ടക്കെട്ട്) यानी खाना हज़म हुए बिना पेट में ही रहने की स्थिति, जो दो प्रकार के है 'मुनकेट्ट' (മുൻകെട്ട്) और 'पिनकेट्ट' (പിൻകെട്ട്)। इसमें 'मुनकेट्ट' (മുൻകെട്ട്) होने से कुछ भी नहीं किया जा सकता, हाथी की मौत निश्चित है, लेकिन 'पिनकेट्ट ' (പിൻകെട്ട്) होने से इसका इलाज मुमकिन है। बहुत सारे हाथियों की मौत इसकी वजह से हुई है, लेकिन "पाम्पाडी राजन" (പാമ്പാടി രാജൻ) जैसे हाथी इस बीमारी से बच भी गए हैं। लेकिन हम सब जानते हैं कि हाल ही में इस बीमारी के कारण हमने एक अनमोल रत्न को खोया है, हम सब का प्यारा "शिवन" (തിരുവമ്പാടി ശിവസുന്ദർ) ....। हाथी चिकित्सक और मालिकों से संबंधित सबसे अधिक समस्या प्रधान एक और बीमारी का ज़िक्र करना बाकी है । "कुट्टमुक्क कन्नन" (കുറ്റുമുക്ക് കണ്ണൻ) और "कुट्टमुक्क नीलकंठन" (കുറ്റുമുക്ക് നീലകണ്ഠൻ) जैसे कई हाथी हेरपिस वायरस संक्रमण के शिकार हुए हैं। इस वायरस के कारण अक्सर तीन घंटे के भीतर भी मौत हो जाती है। इस बीमारी के कारण कोन्नी हाथी अभयारण्य केंद्र में भी कई हाथी के बच्चों की मौत हुई है।

संसार को भगवान का दिया हुआ एक अनमोल वरदान है हाथी.............। वैसे ही भारत का छोटा सा केरल....... हमारी अपनी मिट्टी...... ईश्वर का अपना देश .... दुनिया को दिया हुआ सबसे बड़ा तोफा है त्रिशूर पूरम.... यहीं नहीं त्रिशूर पूरम (തൃശ്ശൂർ പൂരം) हर एक केरलवासी के लिए गर्व की बात हैं। हाथी के बिना क्या केरल........., हाथी के बिना........ क्या पूरम (പൂരം) जिसकी संकल्पंना भी नहीं की जा सकती। हाथी का संरक्षण, देश और हाथी के अस्तित्व केलिए बहुत ही अनिवार्य है। *इसी तरह, सभी के सहयोग से ही, भविष्य में भी हम आगे बढ़ सकते हैं, इसकी आशा करते हुए ....।*

(आभारः हारिस नूह्)

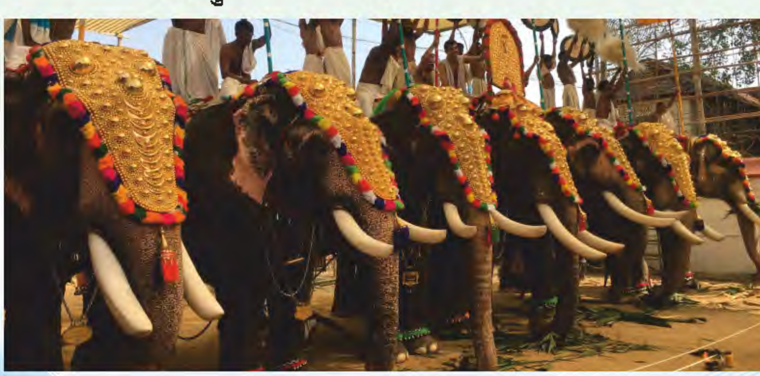

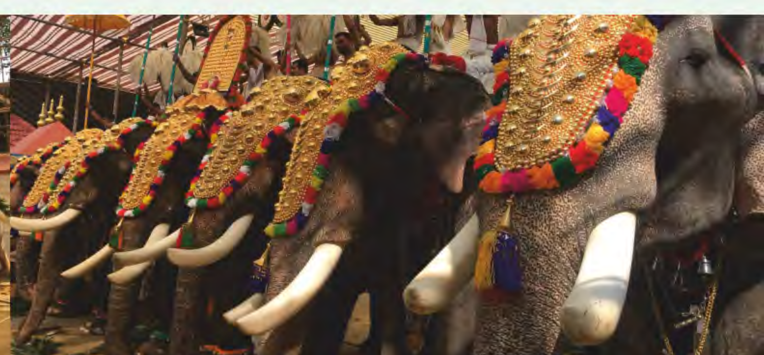

लेख

सिद्ध तमन्ना

सरिता जी
सहायक प्रबंधक

जैसे समुद्र में अनेक लहरें उठकर विलीन हो जाती हैं, उसी प्रकार मानव के मन में भी कई तमन्नाएं पैदा होती हैं। इन तमन्नाओं की कोई सीमा नहीं होती। मैं भी एक इंसान हूँ, मेरे मन में भी कुछ तमन्नाएं हैं। मैं एक ऐसी व्यक्ति हूँ, जो हर छोटी-छोटी चीज़ों में खुशियां ढूँढने की कोशिश करती हूँ। हर अच्छे पल का जश्न मनाती हूँ। अब आप सोच रहे होंगे कि आखिर वह तमन्ना क्या है ? *ड्राइविंग' हाँ.... 'ड्राइविंग' यानी किसी की भी सहायता के बिना अकेले, एक दिन कार चलाकर शिपयार्ड में आना, मेरी कई तमन्नाओं मे से एक है।*

मैं स्कूटर चलाना जानती हूँ और मैं रोज़ स्कूटर में शिपयार्ड आती हूँ। कार का लाइसेंस भी मैंने शादी से पहले ही ले लिया था। मेरे कई दोस्तों को अपनी गाडी में आते हुए देखकर मेरे मन में भी ऐसा विचार आया कि 'क्या मुझसे भी यह हो पाएगा?' लेकिन मुझे ऐसा लगा कि 'यह मेरे लिए नामुमकिन है।" लेकिन मेरे इस नकारात्मक भाव को मिटा दिया, मेरे पतिदेव ने...। उन्होंने मुझे प्रेरित किया कि, 'कोई भी काम इस दुनिया में असंभव नहीं है, निरंतर अभ्यास से हम आसानी से हासिल कर सकते हैं।" उनकी प्रेरणात्मक शब्दों से मैंने निश्चय किया कि, 'अब मैं कार चलाकर ही रहूँगी ।

एक साल पहले, मैं ने कार ड्राइविंग शुरू की थी। मन के भय के कारण, उतनी तेज़ी से सीख नहीं पाई। शिक्षक पतिदेव थे, तब आप अनुमान लगा सकते है कि कितने मीठे स्वर में मुझे शिक्षण मिला होगा । लेकिन पतिदेव के गुस्से को मैंने फूलों का हार समझकर अपना श्रम जारी रखा। उन्होंने मुझे पहले ही ऐसे सडक (इडकोच्ची से पल्लुरुत्ती तक) पर ड्राइविंग पढाना शुरू किया, जहां इतनी भीड थी कि मुझे आंख झपकने का भी समय नहीं मिला। इससे मेरा आत्मविश्वास और भी बढ गया । उस रास्ते पर सीखने के कारण, मुझे अब एर्णाकुलम के किसी भी रास्ते पर ड्राइविंग करने में कोई डर नहीं है।

धीरे-धीरे, मैंने एर्णाकुलम और कहीं दूर जाने केलिए अपने पतिदेव और परिवार के साथ कार चलाना शुरू किया, लेकिन अकेली नहीं.... । मेरे घर से कार बाहर निकालने में थोड़ी कठिनाई है, यानी बहुत ही सावधानी से रिवर्स लेकर बाहर निकालना है । लेकिन मुझे तो सीधा गाडी चलाने में मज़ा आता है, किन्तु रिवर्स लेने में मुझे बहुत मुश्किल महसूस होती है। रिवर्स में अपनी पकड मज़बूत करने केलिए मेरे पति ने कई बार मुझसे सीखने को कहा। लेकिन मैंने मना कर दिया । उसके बाद, उस छोटी-सी तमन्ना को जानबूझकर मैंने भुला दिया, फिर भी, मेरे मन के किसी कोने में, वो छोटी-सी तमन्ना, *'अकेले कार चलाना'* की पुकार गूँज रही थी, एक शुभ अवसर की प्रतीक्षा करते हुए ....।

लॉकडाउण के दौरान भी, पति ने बार-बार मुझे ड्राइविंग के बारे में याद दिलाया । लेकिन मैंने उन्हें अनसुना कर दिया। लॉकडाउण के बाद जब मैं शिपयार्ड आई, तब मैंने देखा कि मेरे कई महिला सहकर्मी अपनी-अपनी कार में आने लगे है। यह देखकर, मेरी तमन्ना फिर से जाग उठी।

मेरी दोस्त लिजा भी नई कार में शिपयार्ड आने लगी। उसने भी मुझे गाडी चलाने की प्रेरणा दी। तब फिर से मेरे मन में कार चलाने की आशा उभर आई। मैंने अपने पतिदेव से कहा, तब उन्होंने एक शर्त लगाई कि, 'जब तुम अकेले सही तरीके से रिवर्स लेकर बाहर निकालोगी, तब तुम गाडी ले जाना'। तब मैंने दृढ निश्चय कर लिया, कि चाहें जो कुछ भी हो जाए, मैं अपने कार को अपने वश में कर ही लूँगी। मेरे मन की इच्छा, इतनी ठोस थी कि मैंने दो-तीन दिन में ही

अच्छी तरह से, रिवर्स लेकर गाडी बाहर निकालने में माहिर हो गई। अपने पतिदेव से भी मुझे प्रशंसा मिली। तब मुझे इतनी खुशी हुई कि मैं उसे शब्दों में बयान नहीं कर सकती। अंत में, मैं अपने पतिदेव से जो सुनना चाहती थी, वो सुनने का सौभाग्य मिला कि *'तुम गाडी शिपयार्ड में ले जाओ"।*

हाँ... वो दिन आ ही गया, जून 24, 2020...। कई सालों से अपने मन में छुपाए रखे छोटी-सी तमन्ना साकार होती दिखाई पड़ी...... *शिपयार्ड के अंदर.... अपनी कार में....पहली बार....., वो भी अकेली........ ।* इसके लिए मैं सबसे पहले ईश्वर को, सदा मेरे साथ रहनेवाले मेरे पतिदेव, परिवार जन, मेरे सहकर्मियों मुख्य रूप से श्रीमती लिजा एवं दोस्तों को भी धन्यवाद देना चाहूँगी।

हमारे आसपास ऐसी बहुत सारी महिलाएं हैं, जो ऐसे कार्यों को अपने लिए असंभव मानती हैं । मैं उन लोगों से यही कहना चाहूँगी, ***"इच्छाएं होने के साथ- साथ उसे पूरा करने की इच्छाशक्ति भी होनी चाहिए, तो इस दुनिया में सब कुछ संभव है।"***

हिंदी मुहावरे

एक पंथ दो काज	Killing two birds with one stone
एक हाथ से ताली नहीं बजती	It takes two to quarrel
जहां फूल वहां काँटा	No rose without throns
जो गरजते हैं वे बरसते नहीं	Barking dogs seldom bites
जैसे को तैसा	Tit for tat
जैसी करनी वैसी भरनी	As you saw, so shall you reap
थोथा चना बाजे घना	Empty Vessels make a lot of noise
पांचों उंगलियां घी में	Bread buttered on both sides
बहती गंगा में हाथ धोना	Making hay while sun shines
मित्र वही जो समय पर काम आए	A friend in need is a friend indeed
यथा राजा तथा प्रजा	As king, so are his subjects
राई का पहाड बनाना	Making a mountain out of a molehill
लोहे को लोहा काटता है	Diamond cuts diamond
समझदार को इशारा काफी	A word to the wise is enough
हथेली पर सरसों नहीं जमती	Rome was not built in one day
जहां चाह वहां राह	Where there is a will, there is way
नाच न आवे आँगन टेढा	A Bad workman blames his tools
इलाज से बचाव अच्छा	Prevention is better than cure
ऊँट के मुँह में जीरा	A drop in the ocean
अकल बडी या भैंस	Knowledge is more powerful than mere strength

कोच्ची टॉलिक से राजभाषा पुरस्कार

कोचीन नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सदस्य संगठनों में 200 से कम कर्मचारी काम करनेवाले सार्वजनिक उपक्रमों के समूह में वर्ष 2018-19 के दौरान राजभाषा हिंदी के उत्तम निष्पादन केलिए कोचीन शिपयार्ड लिमिटेड को समिति की राजभाषा रोलिंग ट्रॉफी (प्रथम पुरस्कार) प्राप्त हुई । दिनांक 12.02.2020 को आयोजित संयुक्त हिंदी समारोह के समापन समारोह में अध्यक्ष के रूप में डॉ के फ्रांसीस जेकब आईटीएस, प्रधान महाप्रबंधक, बीएसएनएल, मुख्य अतिथि के रूप में श्री अल्केश कुमार शर्मा, आईएएस, कोच्ची मेट्रो रेल लिमिटेड, प्रबंध निदेशक और टॉणी मैथ्यू, महाप्रबंधक, गेल इंडिया, कोच्ची उपस्थित थे । समारोह के दौरान कोचीन शिपयार्ड को वर्ष के उत्कृष्ट कार्यान्वयन केलिए प्रथम पुरस्कार, एचआईएल द्वारा प्रायोजित ट्रॉफी और यूनाइटड इंडिया द्वारा प्रायोजित ऑवरॉल चैम्पियनशिप ट्रॉफी भी सम्मानित किया । पुरस्कार को श्री रमेष के जी, मुख्य महाप्रबंधक (मानव संसाधन) ने स्वीकार किया । इस अवसर पर संयुक्त हिंदी पखवाडा समारोह के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं के विजेताओं को भी पुरस्कार प्रदान किया गया ।

राजभाषा गृह पत्रिका 'सागर रत्न' केलिए पुरस्कार

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (टॉलिक), कोच्ची से वर्ष 2018-19 के दौरान कार्यालय ने राजभाषा गृह पत्रिका 'सागर रत्न"केलिए तृतीय पुरस्कार हासिल किया । कोच्ची टॉलिक के संयुक्त हिंदी पखवाडे के समापन समारोह के अवसर पर श्री टॉणी मैथ्यू, महाप्रबंधक, गेल इंडिया, कोच्ची से श्री संपत्त कुमार, सहायक महाप्रबंधक और श्रीमती सरिता जी, सहायक प्रबंधक ने पुरस्कार स्वीकार किया गया ।

संयुक्त हिंदी पखवाडा समारोह 2019 - परिणाम

क्र.सं.	नाम	मद	पुरस्कार
1.	दिव्या एम पै	समाचार वाचन / प्रशासनिक शब्दावली टिप्पण एवं प्रारूप लेखन	प्रथम/ सांत्वना
2	रेश्मा आर	सुगम संगीत (महिला)	प्रथम
3	सेतुलक्ष्मी टी आर	सुगम संगीत (महिला)	तृतीय
4	प्रवीण पी	सुगम संगीत (पुरूष)	द्वितीय
5	वैशाख ए आर	सुगम संगीत (पुरूष)	तृतीय

संयुक्त हिंदी पखवाडा समारोह 2019 - परिणाम

क्र.सं.	नाम व कोड सं.	मद	पुरस्कार
6	किशोर कुमार तेनानी	अंताक्षरी	प्रथम
7	वरुण कुमार सोणी		
8	अलीना नीतू साबिन	सुलेख	सांत्वना
9	रनीष वी एम	सुगम संगीत (पुरूष)	सांत्वना
10	हष्ना पी एम	कविता रचना	सांत्वना
11	बिंदु कृष्णा	एक पल में	सांत्वना
12	अरुण आर	एक पल में	सांत्वना

राजभाषा माह समारोह

सरकारी कामकाज में राजभाषा हिंदी के प्रति जागरूकता तथा उसके उत्तरोत्तर प्रयोग में गति लाने के उद्देश्य से हर वर्ष सितंबर महीने में कार्यालय में हिंदी पखवाडे के रूप में मनाया जाता है। कोचीन शिपयार्ड में इस वर्ष राजभाषा माह के रूप में मनाया गया, जिसका उद्घाटन दिनांक 03 सितंबर 2019 को श्री रमेष के जी, मुख्य महाप्रबंधक (मा.सं. व प्रशा.) ने दीप प्रज्वलन के साथ किया। जिसमें श्री सुबाष ए के, उप महाप्रबंधक (का.व प्रशा.) व श्री संपत्तकुमार पी एन, सहायक महाप्रबंधक (प्रशा.) भी उपस्थित थे। कार्यक्रम का शुभारंभ श्री संपत्तकुमार पी एन द्वारा स्वागत भाषण के साथ हुआ। श्री रमेष के जी के अध्यक्षीय भाषण में उन्होंने राजभाषा कार्यान्वयन केलिए सबसे उत्कृष्ट कीर्ति पुरस्कार प्राप्त करने पर राजभाषा अनुभाग को हार्दिक बधाई देते हुए कहा कि अगली बार एक कदम और आगे बढकर बडी सफलता हासिल करने का प्रयत्न करना चाहिए। श्री सुभाष ए के के आशीर्वचनों में राजभाषा गतिविधियों को समाज में फैलाने पर जोर दिया गया। इस अवसर पर कर्मचारियों, प्रशिक्षार्थियों और कर्मचारियों के बच्चों केलिए हिंदी में विभिन्न प्रतियोगिताएँ आयोजित की गई।

कर्मचारियों और कार्यपालक प्रशिक्षार्थियों केलिए हिंदी में सुलेख, अनुवाद व प्रशासनिक शब्दावली, निबंध लेखन, चित्र क्या कहता है, हिंदी टंकण, गद्यांश वाचन, भाषण, स्मृति परीक्षा, समाचार वाचन, हिंदी फिल्म गीत (महिला और पुरूषों केलिए अलग- अलग) और प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं। इसके अलावा कंपनी के प्रशिक्षार्थियों व ठेके कर्मचारियों केलिए स्मृति परीक्षा, गद्यांश वाचन, भाषण, हिंदी फिल्म गीत (महिला और पुरूषों केलिए अलग- अलग) और प्रश्नोत्तरी आदि प्रतियोगिताएं भी आयोजित की गई। कर्मचारियों के बच्चों केलिए प्रतियोगिताएं तीन स्तरों पर चलाई गई :-जूनियर स्तर केलिए सुलेख, सब-जूनियर स्तर केलिए कविता पाठ एवं स्मृति परीक्षा और सीनियर स्तर केलिए हिंदी फिल्म गीत एवं भाषण आदि। प्रतियोगिताओं के परिणाम संबंधी विवरण दूसरे पृष्ठ में दिया हैः-

1.कर्मचारियां व कार्यपालक प्रशिक्षार्थियां

क्र.सं.	मद	प्रथम	द्वितीय	तृतीय
1	सुलेख	प्रेमकुमार मोतीलाल जोशी	1. प्रदीप बी 2. अलीना नीतू साबिन	संगीता संतोष के एस
2	अनुवाद व प्रशासनिक शब्दावली	सुमी एस	अलीना नीतु साबिन	एमिल्डा डी सिल्वा
3	निबंध लेखन	प्रेमकुमार मोतीलाल जोशी	दिव्या एम पै	1. अरुण आर 2. जिषा ईशी
4	चित्र क्या कहता है?	अनीष इट्टीरा	अनिल मीना	प्रेमकुमार मोतीलाल जोशी
5	हिंदी टंकण	अषिता के ए	विनीता के जी	1.संगीता संतोष के एस 2.आयुष सक्सेना
6	गद्यांश वाचन	दिव्या एम पै	1. एमिल्डा डी सिल्वा 2. मंजू के ए	सुमी एस
7	भाषण	अरुण आर	-	-
8	स्मृति परीक्षा	हष्ना पी एम	1. अरुण आर 2. प्रिया ए बी	1. विनीता के जी 2. सजित पी
9	समाचार वाचन	सुमी एस	अरुण आर	दिव्या एम पै
10	हिंदी फिल्म गीत (पुरुष)	रनीष वी एम	अजित एम आर	विनीष पी
	हिंदी फिल्म गीत (महिला)	कार्तिका एस नायर	सुमी एस	हष्ना पी एम
11	प्रश्नोत्तरी	1. बिंदु कृष्णा 2. कीर्ति आर	1. एस दुर्गा प्रसाद 2. अनुराज कुमार आई	1. सुमी एस 2. हरिकृष्णन जी

2. प्रशिक्षार्थियां और ठेके कर्मचारियां

क्र.सं.	मद	प्रथम	द्वितीय	तृतीय
1	गद्यांश वाचन	विशाल कुमार	मो. शालु रहमान	आतिरा जे वी
2	भाषण	विशाल कुमार	मो. शालु रहमान	-
3	स्मृति परीक्षा	आतिरा गोपालकृष्णन	विशाल कुमार	मो. शालु रहमान
4	हिंदी फिल्म गीत (पुरुष)	वैशाख ए आर	विशाल कुमार	प्रवीण पी
	हिंदी फिल्म गीत (महिला)	रेश्मा आर	सेतुलक्ष्मी टी आर	आतिरा जे वी
5	प्रश्नोत्तरी	1. टी. संतोष कुमार 2. विशाल कुमार	1. जी श्रीनिवास राव 2. मो. शालु रहमान	1. अश्वती वी एच 2. स्नेहा सेबास्टियन

3.कर्मचारियों के बच्चे

(i) जूनियर स्तर

क्र.सं.	मद	प्रथम	द्वितीय	तृतीय
1	सुलेख	एलिस सिमेती श्रीमती एमिल्डा डी सिल्वा की सुपुत्री	श्रीनंदना ई जी श्रीमती अखिला गोपालकृष्णन की सुपुत्री	गौतम कृष्णा एम श्रीमती विनीता के जी का सुपुत्र

(ii) सब-जूनियर स्तर

क्र.सं.	मद	प्रथम	द्वितीय	तृतीय
1	कविता पाठ	केसिया जॉबी श्री जॉबी वर्गीस की सुपुत्री	अश्विन विजित, श्रीमती हष्ना पी एम का सुपुत्र	1. राधिका आर नायर, श्रीमती बिंदु कृष्णा की सुपुत्री 2. नेहा के बी श्रीमती सरिता जी की सुपुत्री
2	स्मृति परीक्षा	कृष्णप्रिया ए श्रीमती प्रिया ए आर की सुपुत्री	अश्विन विजित, श्रीमती हष्ना पी एम का सुपुत्र	पूर्णिमा आर नायर, श्रीमती बिंदु कृष्णा की सुपुत्री

(iii) सीनियर स्तर

क्र.सं.	मद	प्रथम
1	हिंदी फिल्म गीत	अमृता अनूप, श्रीमती सिजी वी एस की सुपुत्री
2	भाषण	रोशन रॉय, श्रीमती जिल्सी पिनहेरो का सुपुत्र

समापन समारोह

राजभाषा माह समारोह का समापन समारोह दिनांक 02 नवंबर 2019, अपराह्न 1430 बजे को समुद्री इंजीनियरी प्रशिक्षण संस्थान (मेटी) के सभा भवन में आयोजित किया गया। समारोह के मुख्य अतिथि हमारे अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक श्री मधु एस नायर महोदय और उनके साथ श्री सुरेष बाबु एन वी, निदेशक (प्रचालन) और श्री जोस वी जे, निदेशक (वित्त) भी उपस्थित थे। समारोह का शुभारंभ श्रीमती सुमी एस और कुमारी अफनान नौषाद के ईश्वर वंदना के साथ शुरू हुआ जो श्री संपत्त कुमार पी एन के स्वागत भाषण के साथ जारी रहा। कार्यक्रम के दौरान

माननीय गृह मंत्री जी का संदेश श्री नागेश कृष्णमूर्ति, सहायक महाप्रबंधक (आईक्यूसी) द्वारा पढा गया। इसके बाद हमारे अध्यक्ष व प्रबंध निदेशक श्री मधु एस नायर ने अपने अध्यक्षीय भाषण में हिंदी के बढते आयामों का जिक्र करते हुए राजभाषा कीर्ति पुरस्कार प्राप्त करने केलिए राजभाषा अनुभाग को तहे दिल से बधाई दी। अपने बातों

को व्यक्त करते हुए बताया कि हिंदी एक ऐसी भाषा है जिसकी गति बहुत तेजी से बढ रही है। इस अवसर पर उन्होंने नई दिल्ली में आयोजित राजभाषा कीर्ति पुरस्कार के वितरण समारोह के अवसर पर माननीय गृह मंत्री श्री अमित साह द्वारा दिए गए भाषण का जो गलत व्याख्यान माध्यमों ने पेश किया उसकी असलीयत को समझाते हुए यह बताया कि हमें हिंदी भाषा के प्रति एक सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाना चाहिए। हिंदी के विकास का उद्देश्य दूसरी भाषाओं को दबाना नही है बल्कि उसको साथ लेते हुए आगे बढने का प्रयास करना है। हिंदी भाषा को अपने प्रेरणात्मक शब्दों के साथ बढावा देते हुए उन्होंने अपना भाषण संपन्न किया। इसके पश्चात कार्यक्रम को एक छोटा सा विराम देते हुए कुमारी रेश्मा आर, परियोजना अधिकारी (सिविल) ने अपने मधुर संगीत से वहाँ उपस्थित लोगों का मन बहलाया।

कार्यक्रम को जारी रखते हुए कंपनी की गृह पत्रिका 'सागर रत्न' का प्रकाशन श्री मधु एस नायर द्वारा श्री सुरेष बाबु एन वी, निदेशक (प्रचालन) को सौंपते हुए किया गया। अगला कर्मचारियों केलिए कार्यालयीन कार्यों में सहायता प्रदान करने हेतु राजभाषा अनुभाग द्वारा एक डेस्कटॉप कलैंडर को रूपांकित किया गया जिसका प्रकाशन श्री मधु एस नायर द्वारा श्री जोस वी जे, निदेशक (वित्त) को सौंपते हुए किया गया।

हमारी **नई परियोजना (सीकेएसआरयू स्कंध) विभाग** को राजभाषा कार्यान्वयन के उत्कृष्ट कार्यान्वयन का भरपूर प्रयास करने हेतु और अपने विभाग में हो रहे पूरे कार्यों को द्विभाषी बनाकर अन्य सभी विभागों को मार्ग दिखाने केलिए यह **राजभाषा शील्ड** प्रदान किया गया।

पिछले वर्षों की भांति इस वर्ष भी **"स्वर्गीय शंकर दयाल सिंह स्मृति पुरस्कार"** उस व्यक्तित्व को दिया जाता है जिन्होंने अपने कार्यालयीन कार्यों में कदम- कदम में हिंदी को साथ

डेस्कटॉप कैलेंडर का विमोचन करते हुए श्री जोस वी जे, निदेशक (वित्त)

सागर रत्न का विमोचन करते हुए श्री सुरेष बाबु एन वी, निदेशक (प्रचालन)

लेकर बढे हैं। इस वर्ष यह पुरस्कार **श्रीमती नयना विजयन के**, को दिया गया। इस पुरस्कार वितरण के तुरंत बाद एक विराम लेते हुए श्री वैशाख आर ने अपने मधुर शब्दों से सबके मन को मोह लिया।

राजभाषा माह के कर्मचारियों के बच्चों केलिए आयोजित हिंदी प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किया गया। इसके पश्चात दसवीं कक्षा में हिंदी विषय केलिए सबसे अधिक अंक प्राप्त कर्मचारियों के बच्चों को प्रमाणपत्र दिया गया। राजभाषा माह के प्रतियोगिता के विजेताओं जिसमें कर्मचारीगण, प्रशिक्षार्थीगण और ठेके के कर्मचारीगण शामिल है उनको प्रथम पुरस्कार ₹1500/-, द्वितीय पुरस्कार ₹1250/- और तृतीय पुरस्कार ₹1000/- तथा प्रमाणपत्र भी दिया गया। इसके अलावा पुरस्कार न प्राप्त सभी भागीदारों को सांत्वना पुरस्कार के रूप में ₹500/- और प्रमाणपत्र भी दिया गया। इसके बाद हमारे संगीत टीम ने एक जबरदस्त रीमिक्स गीत को प्रस्तुत किया जिससे सभी की थकान दूर हो गई और कार्यक्रम के अंत की ओर बढते हुए हमारी सहायक प्रबंधक (राजभाषा) श्रीमती सरिता जी द्वारा धन्यवाद ज्ञापन के बाद राष्ट्रगान के साथ भव्य संपन्न हुआ। पूरे कार्यक्रम का संचालन हिंदी कक्ष द्वारा सफल रूप से किया गया।

राजभाषा माह समारोह में पुरस्कृत कर्मचारीगण

स्कूली छात्रों केलिए हिंदी प्रतियोगिताएं

राजभाषा माह के सिलसिले में एक विशेष कार्यक्रम के रूप में एर्णाकुलम जिले के 12 सरकारी स्कूलों का दौरा करके छात्रों को हिंदी भाषा की प्रमुखता एवं उसके प्रति एक सकारात्मक नजरिया उत्पन्न कराने हेतु प्रशिक्षण सत्र एवं निबंध एवं भाषण प्रतियोगिताएं आयोजित की गई, जिसके विजेताओं को प्रथम पुरस्कार ₹5000/- द्वितीय पुरस्कार ₹4000/- और तृतीय पुरस्कार ₹3000/- तथा प्रमाणपत्र और ट्रॉफी भी दिया गया। तत्संबंधी परिणाम निम्नानुसार है :

निबंध प्रतियोगिता

क्र.सं.	छात्र/ छात्रा का नाम	स्कूल का नाम	पुरस्कार
1	अर्चना जयकुमार	जी वी एच एस एस, चोट्टानिक्करा	प्रथम
2	दयानंद	जी एस एच एस एस, तृपूणित्तुरा	द्वितीय
3	सालिहा ओ एम	जी एच एस एस, एलमक्करा	तृतीय

भाषण प्रतियोगिता

क्र.सं.	छात्र/ छात्रा का नाम	स्कूल का नाम	पुरस्कार
1	श्रेष्ठा एस शेणाई	टी डी एच एस, मट्टान्चेरी	प्रथम
2	मीनाक्षी वी एम	जी जी एच एस एस, तृपूणित्तुरा	द्वितीय
3	वैष्णवी एस	टी डी एच एस, मट्टान्चेरी	तृतीय

केंद्रीय सचिवालय हिंदी परिषद् - अखिल भारतीय पुरस्कार

वर्ष 2018-19 के दौरान केंद्रीय सचिवालय हिंदी परिषद् द्वारा अखिल भारतीय हिंदी टिप्पण एवं प्रारूप लेखन प्रतियोगिता में श्रीमती सुमी एस, उप प्रबंधक (मा.सं.) को तृतीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

राजभाषा माह के दौरान विशेष गतिविधियां

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति कोच्ची के तत्वावधान में एर्णाकुलम जिले के बाढ़ ग्रस्त स्कूलों को हिंदी पुस्तकें प्रदान करना।

सीएसआरसी क्लब को एक सामाजिक दायित्व के रूप में हिंदी पुस्तकों का योगदान।

"उस काम का चयन कीजिये जिसे आप पसंद करते हों, फिर आप पूरी जिंदगी एक दिन भी काम नहीं करेंगे।"

- कन्फ्यूशियस

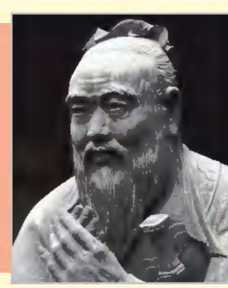

रोज़गार संवर्धन संगोष्ठी

नगर राजभाषा कार्यान्वियन समिति, कोच्ची के तत्वावधान में कोचीन शिपयार्ड लिमिटेड द्वारा दिनांक 28.11.2019 (गुरुवार) को महाराजास कॉलेज, एर्णाकुलम में हिंदी छात्रों (स्नातक, स्नातकोत्तर, पीएचडी) केलिए हिंदी भाषा के प्रति एक अवबोध एवं सकारात्मक रवैया सृजित करने हेतु एक **रोज़गार संवर्धन संगोष्ठी** का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम के मुख्य संकाय श्री रमेश प्रभु, मुख्य राजभाषा अधीक्षक, एचपीसीएल, कोच्ची थे। कुल मिलाकर 80 से अधिक छात्रों ने बढ- चढकर भाग लिया। कार्यक्रम की शुरुआत उद्घाटन समारोह के साथ किया गया जिसमें महाराजास कॉलेज की उप प्रधानाचार्या मुख्य अध्यक्षा थी, मुख्य अतिथि के रूप में कोचीन शिपयार्ड लिमिटेड के सहायक महाप्रबंधक श्री संपत्तकुमार, नगर राजभाषा कार्यान्वियन समिति कोच्ची के

सदस्य सचिव श्रीमती शीला एम सी, (सहायक निदेशक, राजभाषा), हिंदी विभाग की विभागाध्यक्षा भी उपस्थित थे। छात्रों को हिंदी भाषा के प्रति अवबोध कराते हुए उप प्रधानाचार्या ने बडे ही सरल शब्दों में एक प्रेरणात्मक कहानी के साथ अपना लघु भाषण पेश किया। मुख्य अतिथि श्री संपत्तकुमार जी ने कोचीन शिपयार्ड लिमिटेड की गतिविधियों और हिंदी विभाग द्वारा किए जा रहे गतिविधियों का पवर पाइंट प्रस्तुतीकरण पेश किया। इसके बाद नगर राजभाषा कार्यान्वियन समिति कोच्ची के सदस्य सचिव श्रीमती शीला एम सी ने भी छात्रों को हिंदी भाषा के प्रति जागरूक करते हुए अपना आशीर्वचन पेश किया और अंत में हिंदी विभाग की सहायक प्रोफेसर डॉ. रीनाकुमारी ने सभी को धन्यवाद ज्ञापित करते हुए उद्घाटन सत्र का समापन और मुख्य सत्र का संचालन शुरू किया गया।

श्री रमेश प्रभु जी ने बडे ही रोचक ढंग से सत्र को संभाला। छात्रों से उनकी रुचि और हिंदी पढने की प्रेरणा के बारे में पूछते हुए उन्होंने हिंदी भाषा में निहित रोजगार संवर्धन अवसरों की झलक दिखाई गई। छात्रों के संदेहों को दूर करते हुए हिंदी भाषा के प्रति एक सकारात्मक नजरिए को बनाए रखते हुए सत्र आगे बढाया गया। हिंदी भाषा के विविध आयामों को छूते हुए उसकी उन्नति और प्रचार पर विशेष जोर डाला गया। छात्रों की सक्रिय भागीदारी से कार्यक्रम बहुत ही सफल रहा। राष्ट्रगान के साथ कार्यक्रम संपन्न हुआ।

राजभाषा प्रबंधन संगोष्ठी

कार्यपालकों के बीच राजभाषा प्रबंधन के संबंध में एक अवबोध सृजित करने के उद्देश्य से दिनांक 07 मार्च 2020 को महाप्रबंधक से वरिष्ठ प्रबंधक के स्तर तक के कार्यपालकों केलिए एक राजभाषा प्रबंधन कार्यक्रम का आयोजन किया गया। श्रीमती एम श्रीविद्या, वरिष्ठ हिंदी अनुवादक , रबड बोर्ड ने कक्षा का संचालन किया। उन्होंने बडे रोचक एवं ज्ञानवर्धक तरीके से राजभाषा अधिनियम, नियम और तत्संबंधी विभिन्न गतिविधियों पर प्रकाश डाला। हिंदी की प्रमुखता को बताते हुए संविधान में हिंदी के दर्जे को छूते हुए राजभाषा तक की यात्रा का सफल चित्रण किया, साथ ही, कार्यालय में राजभाषा हिंदी के महत्व, राजभाषा कार्यान्वयन के प्रति कार्यपालकों का उत्तरदायित्व, राजभाषा नीति, वार्षिक कार्यक्रम आदि सभी बिंदुओं पर भी उन्होंने प्रकाश डाला। राजभाषा संबंधी प्रावधानों को छोटा-छोटा नुस्का बनाकर प्रस्तुतीकरण के माध्यम से पेश किया गया। कार्यालय में कार्यपालको को किस प्रकार अपने सहकर्मियों को राजभाषा कार्यान्वयन केलिए प्रोत्साहित करना है इस पर भी विचार किया गया। सभी भागीदारों को अपना काम हिंदी में करने हेतु प्रेरित किया गया। भागीदारों ने इस संबंध में अनेक प्रश्नों को उठाया जिसका सफल हल निकाला गया। सभी प्रतिभागियों ने अपने मन की बात बताई और यह विश्वास दिलाया कि उनसे जो बन पडता है वे करेंगे। सत्र में कुल मिलाकर तैंतीस प्रतिभागियों की सक्रिय भागीदारी से कार्यक्रम संपन्न हुआ। यह राजभाषा कार्यान्वयन की प्रगति की ओर एक महत्वपूर्ण कदम था।

प्रशासनिक कार्यपालकों व कर्मचारियों केलिए एक विशेष राजभाषा प्रबंधन संगोष्ठी दिनांक 24.05.2019 (शुक्रवार) को मेटी सम्मेलन कक्ष में आयोजित की गई। श्रीमती एम श्रीविद्या, वरिष्ठ अनुवादक, रबड बोर्ड कोट्टयम, कार्यक्रम की संकाय थी। कुल 65 कार्यपालकों व कर्मचारियों ने कार्यक्रम में भरपूर सहभागिता सुनिश्चित की। कार्यक्रम की शुरूआत श्रीमती एम श्रीविद्या महोदया ने हिंदी भाषा के उद्भव से लेकर उसके विभिन्न रूपों पर प्रकाश डालते हुए आज के कार्यालयीन हिंदी के महत्व पर प्रकाश डाला। हिंदी भाषा के विविध आयामों को छूते हुए उसकी उन्नति और प्रचार पर विशेष जोर डाला गया। प्रतिभागियों से अपने-अपने विचार प्रकट करने को भी कहा गया। उन्होंने बडे ही रोचक ढंग से सभी प्रतिभागियों को अपने हाथ में लिया और हिंदा भाषा के प्रति रुचि बढाने हेतु प्रयास भी किया। महोदया ने सभी प्रतिभागियों को प्रेरणा दी कि अपने विभाग

में अगर वे एक कदम बढायेंगे तो बाकी के कर्मचारियों केलिए यह बहुत ही प्रेरणाजनक होगा। साथ ही उन्होंने विदेशों में भी हिंदी को लेकर हो रहे विकास की ओर भी प्रकाश डाला। उन्होंने यह बताया कि हिंदी जैसी सरल भाषा विश्व में दूजा नहीं है, लेकिन उसे सीखने केलिए मन में चाव की आवश्यकता है। हिंदी दिल की भाषा है, दिल की गहराई को छू लेती है। पूरे भारत को एक सूत्र में पिरोने केलिए हिंदी ही एक भाषा हो सकती है। राजभाषा संबंधी प्रावधानों को छोटा- छोटा नुस्का बनाकर प्रस्तुतीकरण के माध्यम से पेश किया गया। कार्यालयों में हिंदी की उपयोगिता को किस प्रकार बढाया जाए इस पर भी चर्चा की गई। सभी प्रतिभागियों ने अपने मन की बात बताई और यह विश्वास दिलाया कि उनसे जो बन पडता है वे करेंगे। कक्षा बहुत ही रोचक और दिलचस्प थी। कार्यशाला में नामित सभी कार्यपालकों व कर्मचारियों ने भाग लेकर इस कार्यक्रम को शत- प्रतिशत सफल बनाया।

इस संगोष्ठी का समापन समारोह कुसाट विश्वविद्यालय के पूर्व उप-कुलपति श्री आर शशिधरन की अध्यक्षता में कोचीन शिपयार्ड लिमिटेड के अध्यक्ष व प्रबंध निदेशक श्री मधु एस नायर एवं अन्य कार्यपालकों की उपस्थिति में उसी दिन अपराह्न 3.30 बजे को आयोजित किया गया। इस समारोह में भाग लेते हुए उन्होंने हिंदी भाषा की प्रगति पर जोर दिया और यह बताया कि हिंदी एक ऐसी भाषा है जो आज तेजी से सभी देशों में अपना प्रचार कर रही है। इसको अगर हर एक भारतीय सकारात्मक दृष्टिकोण से अपनाए तो निश्चय ही हम देश में 'विविधता में एकता' के नारे को साकार कर सकते है। इस अवसर पर सीएसआरसी क्लब को एक सामाजिक दायित्व के रूप में 5000/- रु. की राशि की हिंदी पुस्तकों का योगदान किया गया। इसके साथ ही मुख्य अतिथि द्वारा हिंदी प्रोत्साहन योजना के विजेताओं को प्रमाणपत्र भी वितरित किया गया। राष्ट्रगान के साथ कार्यक्रम संपन्न हुआ।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति - राजभाषा संगोष्ठी एवं कार्यशाला

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के तत्वावधान में एचपीसीएल के प्रायोजन से बीएसएनएल भवन में फरवरी माह में एक राजभाषा संगोष्ठी आयोजित की गई । इस

संगोष्ठी में कोचीन शिपयार्ड ने भी अपनी भरपूर भागीदारी सुनिश्चित की । दिनांक 26 फरवरी 2020 को बीएसएनएल, कोच्ची में आयोजित संगोष्ठी में कोचीन शिपयार्ड को प्रतिनिधित्व करते हुए श्रीमती लिजा जी एस, हिंदी अनुवादक और श्रीमती आतिरा आर एस ने इसमें सक्रिय रूप से भाग लिया । संगोष्ठी में विविध विषयों पर विशेषज्ञों ने पर्चियां प्रस्तुत कीं । संगोष्ठी का एक विषय "राजभाषा हिंदी के प्रयोग में साहित्यिक एवं बोलचाल की हिंदी में आए परिवर्तन" था, जिसमें श्रीमती लिजा जी एस, हिंदी अनुवादक ने एक प्रस्तुतीकरण पेश किया, जो बहुत ही रोचक एवं सभी के ध्यान आकर्षित करनेवाले थे ।

दिनांक 27 फरवरी 2020 को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के तत्वावधान में एचपीएसएल, कोच्ची में राजभाषा समन्वयकों केलिए एक राजभाषा कार्यशाला आयोजित की गई, जिसमें शिपयार्ड की ओर से श्रीमती दिव्या के वी, कनिष्ठ वाणिज्यिक सहायक और श्रीमती दिव्या पी मुरली, आशुलिपिक ने भाग लिया । विभिन्न सत्रों में कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसमें एक सत्र 'बोलचाल की हिंदी' पर किया गया, जिसका संचालन श्रीमती लिजा जी एस, हिंदी अनुवादक द्वारा किया गया, जो बहुत ही ज्ञानवर्धक था ।

बोलचाल की हिंदी कक्षाएं

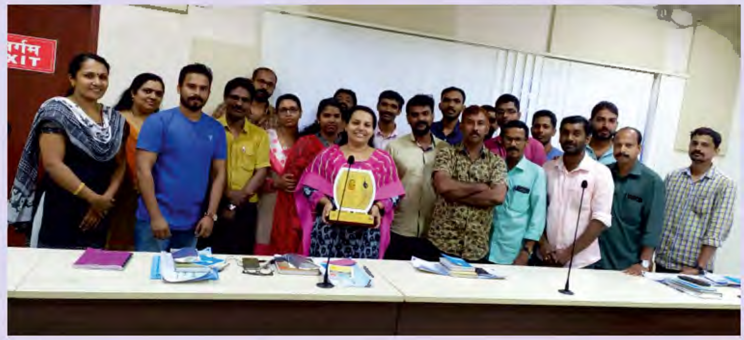

कोचीन शिपयार्ड की गतिविधियां अब कोच्ची में सीमित न रहकर भारत के विविध स्थानों में फैल रहा है । साथ ही, हमारे मुख्य ग्राहक भी भारत के विविध जगहों से जुडे हुए हैं । इसी उद्देश्य से, शिपयार्ड के सभी कर्मचारियों को हिंदी भाषा जानने की आवश्यकता को मद्देनजर रखते हुए, सभी केलिए बोलचाल की हिंदी कक्षाएं आयोजित की जा रही है । मई से जून, 2019 तक और अक्तूबर 2019 से जनवरी 2020 तक कर्मचारियों केलिए कक्षाएं आयोजित की गईं । श्रीमती लिजा जी एस, हिंदी अनुवादक द्वारा बहुत ही रोचक एवं सूचनात्मक तरीके से कक्षा चलायी गई । शिपयार्ड के विविध विभागों से आए 50 कर्मचारियों ने प्रशिक्षण के माध्यम से हिंदी भाषा में अपनी पकड मज़बूत की ।

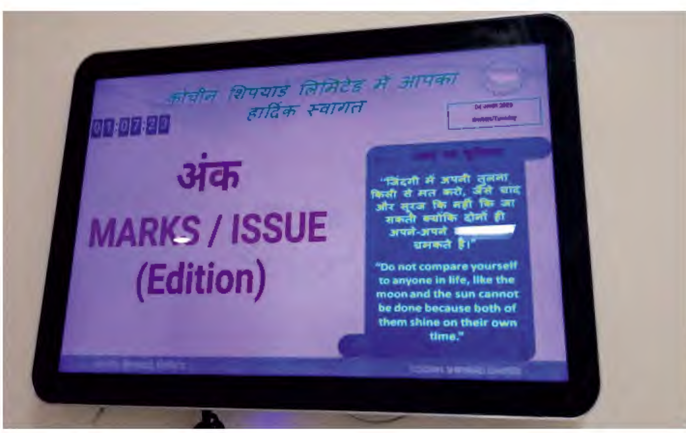

इलेक्ट्रॉनिक प्रदर्शन बोर्ड

हिंदी अनुभाग की पहल से कंपनी के सात जगहों में इलेक्ट्रॉनिक प्रदर्शन बोर्ड स्थापित किया गया, जिसमें राजभाषा हिंदी के व्यापक प्रचार और अधिकाधिक कर्मचारियों को आसानी से समझाने के उद्देश्य से आज का शब्द एवं उद्धरण द्विभाषी रूप में प्रकाशित किया जाता है ।

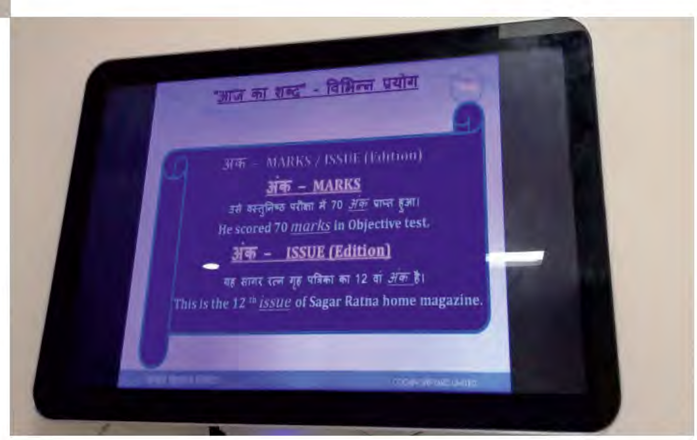

हिंदी कार्यशाला

अप्रैल- जून तिमाही का एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला दिनांक 20.06.2019 (गुरुवार) को मुख्य कार्यालय के सम्मेलन कक्ष में आयोजित की गई। श्रीमती पापिया चाटर्जी, सहायक प्रबंधक (राजभाषा), राष्ट्रीय बीमा निगम लिमिटेड , कोच्ची कार्यशाला की संकाय थी। सब से पहले उन्होंने सभी भागीदारों को अपना परिचय दिया और यह बताते हुए आगे बढी कि हिंदी भाषा एक ऐसी भाषा है जो दिलों को जोडता है। उन्होंने कुछ पवर पांइट प्रस्तुतीकरण दिखाया और विषय की ओर बढी। भाषा की परिभाषा पूछते हुए सत्र आगे बढा। विभिन्न भाषाओं के कर्मचारियों से भाषा की परिभाषा देने को कहा गया। हिंदी किस प्रकार देश की भाषा बनी उसका विस्तार और लोगों तक उसकी पहुंच इन सभी आयामों को छूते हुए सत्र आगे बढा। कार्यालयों में हिंदी की उपयोगिता को किस प्रकार बढाया जाए इस पर भी चर्चा की गई। एक प्रेरणात्मक कहानी दिखाते हुए उसमें निहित सीख की चर्चा हुई। सभी भागीदार पूरी तरह से कक्षा में विलीन थे। राजभाषा संबंधी प्रावधानों को छोटा- छोटा नुस्का बनाकर प्रस्तुतीकरण के माध्यम से पेश किया गया। कक्षा बहुत ही रोचक और दिलचस्प था। आगे बढते हुए उन्होंने हिंदी भाषा के व्याकरण से सभी भागीदारों को अवगत कराया। लिंग पहचानने के कुछ सरल तरीकों को समझाया। रोचक कार्यशीटों से भागीदारों को कुछ समय केलिए व्यस्त रखा। एक छोटा सा कार्य सौंपकर उसमें से उत्तम तीन भागीदारों को इनाम भी दिए। कार्यशाला में नामित सभी भागीदारों ने इसमें भाग लेकर इस कार्यक्रम को शत- प्रतिशत सफल बनाया। कुल मिलाकर 25 प्रतिभागियों ने सक्रिय रूप से भाग लिया।

जुलाई - सितंबर तिमाही का एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला दिनांक 27.09.2019 (शुक्रवार) को मुख्य कार्यालय के सम्मेलन कक्ष में आयोजित की गई। श्री शोजो लोबो, प्रबंधक (राजभाषा), केनरा बैंक, क्षेत्रीय कार्यालय, कोच्ची कार्यशाला के संकाय थे। सब से पहले उन्होंने सभी भागीदारों को अपना परिचय दिया और यह बताते हुए आगे बढे कि हिंदी भाषा एक ऐसी भाषा है जो दिलों को जोडता है। उन्होने पवर पाइंट प्रस्तुतीकरण के जरिए कई

ज्ञानवर्धक बातों को दिखाया और विषय की ओर बढे। भाषा की परिभाषा पूछते हुए सत्र आगे बढा। कई प्रतिभागियों से भाषा की परिभाषा देने को कहा गया। हिंदी किस प्रकार देश की भाषा बनी उसका विस्तार और लोगों तक उसकी पहुंच इन सभी आयामों को छूते हुए सत्र आगे बढा। कार्यालयों में हिंदी की उपयोगिता को किस प्रकार बढाया जाए इस पर भी चर्चा की गई। एक प्रेरणात्मक कहानी कहते हुए उसमें निहित सीख की चर्चा हुई। सभी भागीदार पूरी तरह से कक्षा में विलीन थे। राजभाषा संबंधी प्रावधानों को छोटा- छोटा नुस्का बनाकर प्रस्तुतीकरण के माध्यम से पेश किया गया। कक्षा बहुत ही रोचक और दिलचस्प था। आगे बढते हुए उन्होंने हिंदी भाषा के व्याकरण से सभी भागीदारों को अवगत कराया। उन्होंने यूनिकोड प्रशिक्षण की ओर भी अपनी पहुँच

फैलायी। प्रतिभागियों से लैपटॉप पर हिंदी टाइप करवाया। सभी प्रतिभागी बडे ही उत्साह से लैपटॉप पर हिंदी टाइप कर रहे थे। हिंदी टिप्पणियों पर भी अभ्यास करवाया। कार्यशाला में नामित सभी भागीदारों ने इसमें भाग लेकर इस कार्यक्रम को शत - प्रतिशत सफल बनाया। कुल मिलाकर 10 प्रतिभागियों ने सक्रिय रूप से भाग लिया।

अक्तूबर - दिसंबर तिमाही का एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला दिनांक 30.12.2019 (सोमवार) को मुख्य कार्यालय के

सम्मेलन कक्ष में आयोजित की गई। डॉ हरमन पी जे, सहायक प्रोफेसर, कालीकट विश्वविद्यालय, कार्याशाला के संकाय थे। अपना परिचय देने के बाद सभी भागीदारों से अपना परिचय कराते हुए भाषा की गहराई में जा उतरे । उन्होंने भाषा के प्रचार से लेकर उसके विकास की ओर प्रकाश डालते सत्र को आगे बढाया, बढे ही रोचक ढंग से उन्होने विषय की शुरूआत की। हिंदी भाषा में हो रही प्रगति को समझाया गया। उन्होंने मुख्य रूप से टिप्पण और आलेखन पर जोर दिया और भागीदारों से इस संबंधी अभ्यास कराया। उन्होंने कार्यान्वयन हेतु प्रतिभागियों को यह नुस्का दिया कि पहले केवल छोटे वाक्यांशों का प्रयोग करें और उसके उपयोग को बढाते हुए बडे वाक्यांशों का प्रयोग करें। उन्होंने फिर प्रतिभागियों का ध्यान अनुवाद की ओर भी आकर्षित किया। वाक्यांशों का अंग्रेजी रूपांतर देते हुए उसका हिंदी वाक्यांश लिखने को कक्षा में सभी की सहभागिता सुनिश्चित करते हुए सत्र को व्यस्त रखा। सभी 33 प्रतिभागियों ने सक्रिय रूप से कार्यशाला में भाग लिया।

जनवरी-मार्च तिमाही का एक दिवसीय कार्यशाला दिनांक 17.03.2020 (मंगलवार) को मुख्य कार्यालय के सम्मेलन कक्ष में आयोजित की गई। श्रीमती लिजा जी एस कार्यशाला की संकाय थी। सभी प्रतिभागियों का स्वागत किया गया और सभी से अपना परिचय कराते हुए सत्र को आगे बढ़ाया गया। हिंदी भाषा की सार्थकता और उसके महत्व को समझाते हुए राजभाषा नीति की ओर सत्र को ले जाया गया। राजभाषा नियम, अधिनियम आदि को बहुत ही सरल तरीके से समझाया गया और उससे जुड़े प्रश्नों को पूछा गया जिसका तुरंत ही सभी से उत्तर प्राप्त हुआ। बोलचाल की हिंदी पर भी सत्र जारी रहा। प्रतिभागियों से हिंदी शब्दों का स्पष्ट वाचन कराया गया और सभी से हिंदी में वार्तालाप करने को कहा गया। सभी ने सक्रिय रूप से इस कार्यशाला में अपनी सहभागिता सुनिश्चित की। सभी 27 प्रतिभागियों ने सक्रिय रूप से कार्यशाला में भाग लिया और अपनी प्रतिक्रिया भी व्यक्त की।

"जन्म देने वालों से अच्छी शिक्षा देने वालों को अधिक सम्मान दिया जाना चाहिए: क्योंकि उन्होंने तो बस जन्म दिया है, पर उन्होंने जीना सिखाया हैं।"

अरस्तु

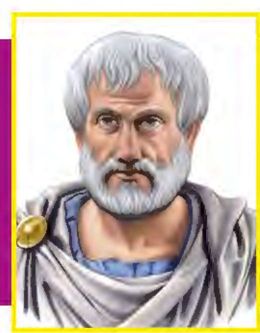

बोलचाल की हिंदी

दो मित्रों के बीच बातचीत

अंजली : हैलो, राहुल !!! कैसे हो ?

Anjali : Hello Rahul!! How are you?

राहुल : मैं ठीक हूँ अंजली, तुम कैसी हो ?

Rahul : I am fine. How are you?

अंजली : मैं भी ठीक हूँ, क्या हम आज कहीं घूमने चलें ?

Anjali : I am fine too. Today shall we go out somewhere?

राहुल : हां क्यों नहीं ?, चलो हम कहीं खाना खाने चलें ।

Rahul : Yes, why not? Let's go to eat.

अंजली : हां, यह ठीक रहेगा । मुझे भी भूख लगी है, लेकिन कहां चले ?

Anjali : Yes, this is a good idea. I am feeling hungry too, but where shall we go?

राहुल : चलो, हम स्कूल के पासवाले होटल में चलते हैं, वहां से हम सिनेमा देखने भी जा सकते हैं ।

Rahul : Let's go to the restaurant near the school, from there we can go for a movie too.

अंजली : वाह !!! ये तो बहुत बढिया है, चलो हम बाकी दोस्तों को भी बुला लें ।

Anjali : Wow!! This is a good idea. Let's call our other friends too.

राहुल : सभी साथ होंगे तो ज़्यादा मज़ा आएगा । मैं करीम और कुसुम को बुलाता हूँ । हम थोडी देर में यहां ही मिलते हैं फिर सभी साथ चलते हैं ।

Rahul : The more the merrier. I will call Kareem and Kusum. We will meet here in a few and then we all will go together.

अंजली : ठीक है !!! हम 15 मिनट में मिलते हैं ।

Alright! let's meet in 15 minutes.

समय निर्धारण - हिंदी में

सवा	¼
डेढ़/ढ़ाई	½
पौने	¾

सवा एक बजे

डेढ़ बजे

पौने दो बजे

ढ़ाई बजे

साढ़े तीन बजे

व्यवसाय पेशेवर पुरस्कार

श्री मधु एस नायर, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक ने वर्ष के 'धनम' व्यवसाय पेशेवर पुरस्कार जीत लिया । दिनांक 28 जून 2019 को आयोजित समारोह में श्री टॉम जॉस, मुख्य सचिव, केरल सरकार द्वारा पुरस्कार प्रदान किया गया । यह पुरस्कार श्री मधु एस नायर द्वारा प्रदत्त योगदान के मान्यता में है, जिन्होंने एक सार्वजनिक उद्यम से संबंधित मिथक का पुनर्लेखन किया और अपनी मुख्य विकासात्मक पहल के साथ कोचीन शिपयार्ड का मार्गदर्शन किया । जूरी के मूल्यांकन के अनुसार, यह पुरस्कार उनके इस संस्था को विकास के पथ पर आगे बढाने और इसे सार्वजनिक क्षेत्र के उद्यमों के बीच एक मॉडल संस्थान में बदल देने के प्रयासों के परिणामस्वरूप है ।

भारत सरकार के साथ समझौता ज्ञापन

कोचीन शिपयार्ड लिमिटेड ने वित्त वर्ष 2019-20 केलिए कंपनी के कार्य-निष्पादन लक्ष्यों को रेखांकित करते हुए दिनांक 26 अप्रैल 19 को पोत परिवहन मंत्रालय के साथ एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किया गया। हर साल, सीएसएल और पोत परिवहन मंत्रालय, भारत सरकार के बीच एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किया गया हैं, जिसमें सीएसएल के वार्षिक कार्य-निष्पादन की निगरानी केलिए वित्तीय और गैर-वित्तीय दोनों तरह के विस्तृत लक्ष्य नियत किए जाते हैं । वित्तीय वर्ष 2019-20 केलिए सीएसएल का लक्ष्य निम्नानुसार है :

कुल कारोबार	:	3500 करोड रुपए
पूंजी व्यय	:	660 करोड रुपए

वर्ष 2019-20 का समझौता ज्ञापन प्रकृति में विशिष्ट है, जो संगठन के महिला कर्मचारियों के विकास पर बहुत जोर देता है । इस दिशा की ओर, सीएसएल ने महिला कर्मचारियों को कार्य संतुलन तथा नेतृत्व विकास केलिए 10 मेंटरशिप कार्यक्रम शुरू करते हुए लक्ष्य नियत किया है ।

कोचीन शिपयार्ड केलिए 23 मेट्रो नावों के निर्माणादेश

कोचीन शिपयार्ड ने कोच्ची वाटर केलिए 23 नावों के निर्माण केलिए कोच्ची मेट्रो रेल निगम लिमिटेड कार्यादेश जीता है । ये नावें इलेक्ट्रिक/ हाइब्रिड प्रौद्योगिकी का उपयोग करके अंतर्देशीय परिवहन की सुविधा प्रदान करेंगी । पूरे कोच्ची मेट्रो में अंतर्राष्ट्रीय मानकों की लगभग 78 उच्च गुणतावाली नावों की आवश्यकता है । सीएसएल द्वारा पेश की गई ये नावें आंतरिक (इन-हाउस) विशेषज्ञता के भीतर बनाए गए हैं । 100 यात्री तक वहन करने की क्षमतावली ये नावें लगभग 24 मीटर लंबी होंगी और एक घंटे तक चलने केलिए उच्च गुणता वाली लिथियम टाइटेनियम ऑक्साइड बैटरी से सुसज्जित विद्युत प्रणोदन प्रणाली का उपयोग करके संचालित किया जाएगा ।

सतर्कता जागरूकता सप्ताह का पालन

शिपयार्ड में दिनांक 28 अक्तूबर 2019 से 02 नवंबर 2019 तक सतर्कता जागरूकता सप्ताह का पालन किया गया । इस वर्ष का विषय-वस्तु "ईमानदारी - एक जीवन शैली" था । दिनांक 28 अक्तूबर, 2019 को सभी कर्मचारियों को सभी विभागाध्यक्षों द्वारा प्रतिज्ञा दिलाया गया । अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक द्वारा नियत समय में मुख्य कार्यालय में प्रतिज्ञा दिलाया गया । कोचीन शिपयार्ड मनोरंजन क्लब द्वारा कर्मचारी कैंटीन परिसर में "हमारे समाज में भ्रष्टाचार" पर एक नुक्कड नाटक की व्यवस्था की गई थी । गव.लॉ कॉलेज, एर्णाकुलम और केन्द्रीय विद्यालय, एर्णाकुलम के छात्रों केलिए वाद-विवाद प्रतियोगिता आयोजित की गई । दिनांक 01 नवंबर 2019 को वरिष्ठ अधिकारियों केलिए "सार्वजनिक प्रापण में पारदर्शिता" पर एक कार्यशाला आयोजित की गई, जिसका संचालन श्री वी रामचंद्रन, पूर्व सीटीई ने किया । कोचीन शिपयार्ड में सतर्कता जागरूकता सप्ताह 2019 का आयोजन सार्थक और उद्देश्यपूर्ण तरीके से किया गया था ।

1200 यात्री जहाज का जलावतरण

महिला दिवस

विप्स के तत्वावधान में, कोचीन शिपयार्ड लिमिटेड ने दिनांक 09 मार्च 2020 को मर्सी होटल में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस बडी उमंग के साथ मनाया गया । इस दिन को बहुत ही भव्यता के साथ मनाया गया, जिसमें सीएसएल की सभी महिला कर्मचारियों केलिए गर्व और खुशी थी । मुख्य अतिथि, श्रीमती एम बीना आईएएस, कोचीन पोर्ट ट्रस्ट की अध्यक्षा ने औपचारिक रूप से समारोह का उद्घाटन किया । उन्होंने महिलाओं को पुरुषों से नहीं बल्कि कांच की छाद से आजादी हासिल करने की सलाह दी, जो प्रत्येक महिला ने अपने विचारों, भावों और स्वतंत्रता को झकझोर कर अपने मन में स्थापित की है । इग्नु, कोच्ची के सहायक क्षेत्रीय निदेशक डॉ सिंधु पी नायर ने 'महिला सशक्तिकरण, उच्च शिक्षा और अधिकार' विषय पर एक शिक्षाप्रद संगोष्ठी ली । श्री जेसिका मैंडरोइना, अंतर्राष्ट्रीय प्रशिक्षक ने 'खुशी और सफलता, पसंद के रूप में बल्कि मौके के रूप में नहीं' विषय पर सत्र का संचालन किया । श्रीमती रितु पॉल और उनकी टीम के नेतृत्व में एक जूम्बा सत्र का आयोजन किया, जो एक धमाके साथ चिन्हित किया, जिससे सभी को जोश, उत्साह और ऊर्जा मिली । यह दिन शिपयार्ड के सभी महिला कर्मचारियों केलिए एक यादगार पल था ।

उत्पादकता माह समारोह

प्रत्येक वर्ष 12 फरवरी को राष्ट्रीय उत्पादकता दिवस के रूप में मनाया जाता है । वर्तमान वर्ष के विषय वस्तु "उत्पादकता और स्थिरता केलिए वर्तुलाकार अर्थव्यवस्था" है । उत्पादकता माह समारोह के सिलसिले में, कर्मचारियों के बीच उच्चतम उत्पादकता, पर्यावरण संरक्षण और संसाधनों के अनुकूलतम उपयोग आदि के संबंध में एक जागरूकता पैदा करने केलिए कंपनी में विविध घटनाएं आयोजित की गई थीं । दिनांक 24 अप्रैल 2019 को आयोजित उत्पादकता माह समारोह के समापन समारोह में श्री ए पी एम मुहम्मद हनीष, आईएएस, प्रबंध निदेशक, मेट्रो रेल लिमिटेड मुख्य अतिथि थे । इस अवसर पर, उत्पादकता उत्कृष्टता पुरस्कार और प्रतियोगिताओं के पुरस्कार वितरित किए गए ।

राष्ट्रीय एकता दिवस

कोचीन शिपयार्ड में दिनांक 31 अक्तूबर 2019 को राष्ट्रीय एकता दिवस मनाया गया । हम इस दिन को भारत के लौह पुरुष सरदार वल्लभ भाई पटेल को श्रद्धांजलि देने केलिए मनाते हैं, क्योंकि उन्होंने देश को एकजुट करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी । इस दिन को सतर्कता दिवस के रूप में भी मनाया जाता है । श्री मधु एस नायर, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक और श्री बिजॉय भास्कर, निदेशक (तकनीकी) ने क्रमशः हिंदी और अंग्रेजी में प्रतिज्ञा दिलाई ।

ऊर्जा संरक्षण दिवस

भारत में 14 दिसंबर को राष्ट्रीय ऊर्जा संरक्षण दिवस मनाया जाता है । इस सिलसिले में सीएसएल ने 16 दिसंबर 2019 को मेटी सम्मेलन कक्ष में एक जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया । डॉ आर हरिकुमार, संयुक्त निदेशक, ऊर्जा प्रबंधन केन्द्र, केरल, ऊर्जा संरक्षण अधिनियम के राज्य नामित एक अभिकरण, ने कार्यक्रम का संचालन किया । उन्होंने हमारे दैनिक जीवन में ऊर्जा संरक्षण के महत्व और उद्योग/घरेलू क्षेत्र में नवीकरणीय ऊर्जा कार्यान्वयन के बारे में बात की ।

सुरक्षा दिवस समारोह

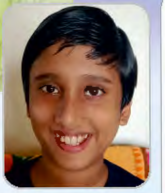

▲ अभिषेक पी शशीन्द्रन
शशीन्द्रदास पी एस का सुपुत्र

इष्या विनोद ▲
कीर्ति आर की सुपुत्री

▲ एंजलीना जॉय
अलीना नीतु साबिन की सुपुत्री

फातिमत्तु सुहरा ए वाई ▲
यूसफ ए के की सुपुत्री

बाल रचनाएं

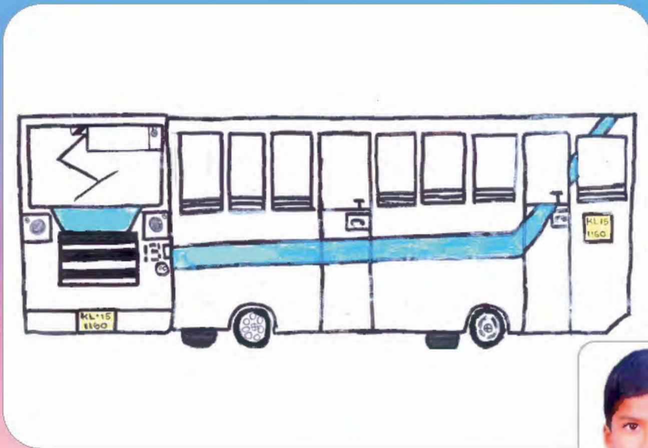

▲ कृष्णजित पी एस
प्रदीब बी का सुपुत्र

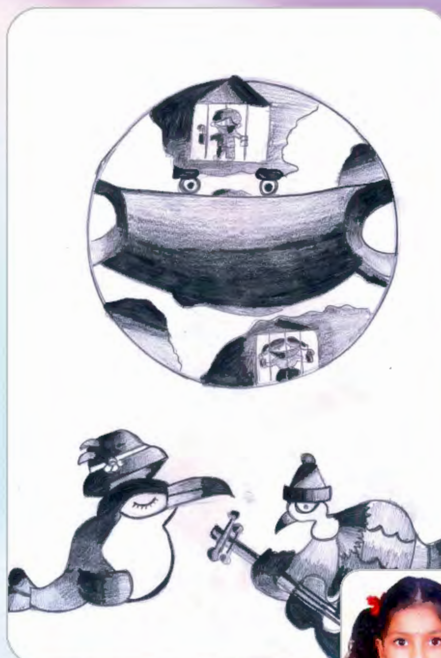

▲ कृष्ण प्रिया पी एस
प्रदीब बी की सुपुत्री

▲ नेहा के बी
सरिता जी की सुपुत्री

▲ आदित्या लाल
षिजुलाल एच का सुपुत्र

मसालों का नाम जानिए...

പെരുംജീരകം
सौंफ
Aniseed

ഏലക്ക
इलायची
Cardamom

കറുവപ്പട്ട
दालचीनी
Cinnamon

ഗ്രാമ്പു
लौंग
Clove

മഞ്ഞൾ
हल्दी
Turmeric

കുരുമുളക്
काली मिर्च
Pepper

മല്ലി
धनिया
Coriander

ഉലുവ
मेथी के दाने
Fenugreek seeds

ജാതിപത്രി
जावित्री
Mace

वर्ग-पहेली

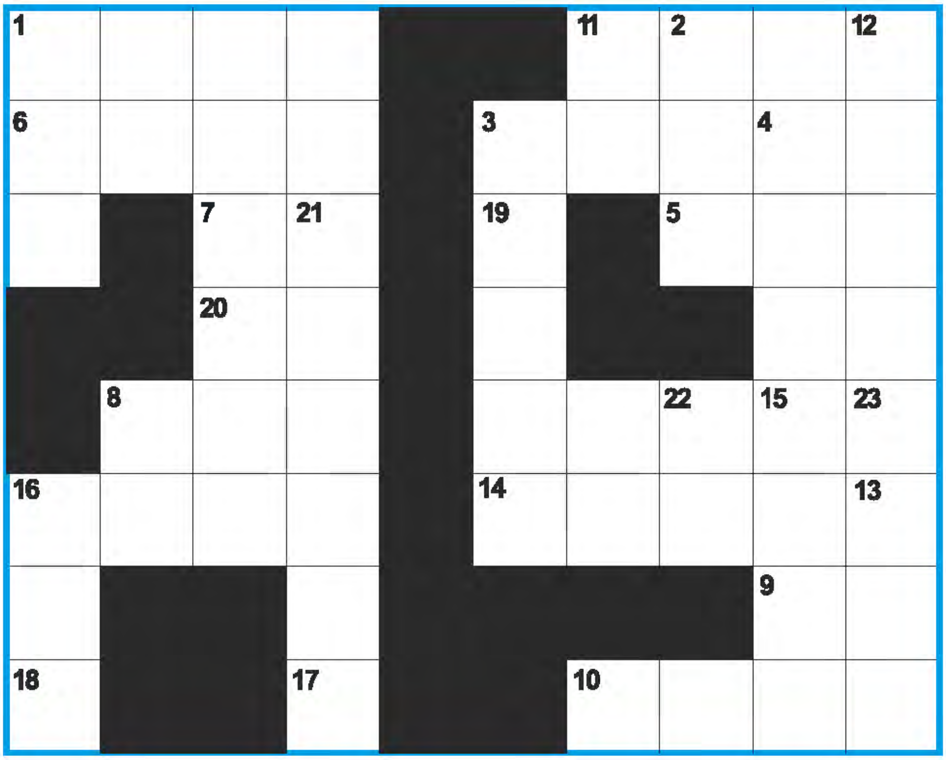

बाएं से दाएं →

1. "GINGER" का हिंदी शब्द (4)
2. मुक्त करना (3)
3. अरब देशों में पाए जानेवाला फल (3)
5. हरे रंग का गोल आकार की सब्ज़ी (3)
6. एक मौसमी हरा सेब (4)
8. हरे रंग का पक्षी (2)
10. एक फल और सब्ज़ी (4)
14. "MILLET" का हिंदी शब्द (3)
16. केरल का श्रीफल (4)
20. हल्दी का रंग (2)

दाएं से बाएं ←

15. सफेद रंग का प्याज (4)
23. चेहरे का मांसल भाग (2)

नीचे से ऊपर ↑

9. मलयालम में "चोर" कहा जाता है (3)
17. कोकिल (3)
18. नींबू पानी में डाली जाने वाली पत्ती (3)
23 खरगोश का प्रिय भोजन (3)

ऊपर से नीचे ↓

1. लाल दानों वाला फल (3)
2. राष्ट्रीय पक्षी (2)
4. केरल का देशीय फल (4)
7. ज्यादा काले बीज वाला फल (3)
11. ड्राई फ्रूट्स का राजा (2)
12. "VISION" का हिंदी शब्द (3)
13. — खट्टे होना (मुहावरा) (3)
19. बैंगनी रंग का फल (3)
21. होंठों का रंग (3)
22. इंद्रधनुष का चौथा रंग (2)

कोरोना वायरस संक्रमण के खतरे से बचें

साबुन और पानी या अल्कोहल युक्त हैंड रब से हाथ साफ करें ।

खांसने और छींकने पर नाक और मुंह को टिश्यू से ढकें या बाजू का इस्तेमाल करें ।

जुकाम या फ्लू जैसे लक्षणोंवाले व्यक्तियों से दूर रहें ।

मांस और अंडे को अच्छी तरह से पकाएं ।

जीवित पशुओं के साथ असुरक्षित संपर्क से बचें ।

अगर आपको बुखार और खांसी है तो यात्रा न करें ।

यदि आपको बुखार, खांसी और सांस लेने में कठिनाई हैं, तो, जल्द ही डॉक्टर से संपर्क करें और अपने स्वास्थ्य सेवा प्रदाता के साथ पिछली यात्रा के विवरण को साझा करें ।

विश्व स्वास्थ्य संगठन

TOMYAS